# गुलो



सुभाष चंद्र यादव

# गुलो

( उपन्यास )

# गुलो

सुभाष चंद्र यादव

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

ISBN: 987-81-932106-0-4

प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, गुदरी बाजार,
सुपौल-852131


आंतरिक रेखांकन : अनुप्रिया
अंतिम रेखांकन : रवींद्रनाथ ठाकुर
प्रथम संस्करण : 2015
मूल्य : 100/- (एक सय टाका)
मुद्रक : यूनिटेक ग्राफिक प्वॉइंट, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032
पुस्तक प्राप्ति स्थान : किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131
शेखर प्रकाशन, पोपुलर फर्मा के पीछे,
न्यू मार्केट, पटना-800001

**GULO**: NOVEL by SUBHASH CHANDRA YADAV

# आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा

सुभाष चंद्र यादव मैथिलीक पहिल एहन रचनाकार छथि जे मैथिली भाषा आ साहित्य कें एक एहन जमीन देलनि जे वास्तविक अर्थ मे जनपदक जमीन छल। अपन आभिजात्य आ तत्संबंधी दर्प ओ गरिमासँ लैस पंडितवर्गक मैथिली लेल सुभाषक मैथिली चुनौती जकाँ ठाढ़ भ' गेल आ अखनो ओ विशद विवेचनक मांग करैत अछि। अभिजनक भाषाक समानांतर एक एहन भाषा ठाढ़ भेल जे गरीब-गुरबा, अनपढ़-गमार आ जनपदक सुच्चा-सुधंग लोकक भाषा थिक। एक एहन भाषा जाहिमे ओकर सुख-दुख, हर्ष-उल्लास, राग-विराग, कामना, गरीबी, आफत-विपत्ति व्यक्त होइत अछि। ई एक एहन मैथिली थिक जकरा बड़का-बड़का ठोप-चानन कयनिहार भाषा कें दूषित करब मानैत छथि। मुदा वास्तविकता एहिसँ अलग अछि। मैथिलीक कथा सुभाषक माध्यमे पहिल बेर एहि भाषाक सुगंध ओ सुवासक स्पर्श सँ परिचित भेल। यदा-कदा आनो कथाकारक भाषामे एहन बानगी देखल जाइत अछि मुदा अपन समग्र आ विशिष्ट संदर्भ मे ई सुभाषेक कथा-संसारमे प्रकट भेल।

ई आकस्मिक नहि छल। मोन पाड़ल जयबाक चाही महाकवि विद्यापतिकें जखन ओ कहैत छथि—'देसिल बयना सब जन मिट्ठा।' आखिर ई देसिल बयना की थिक, से कहबाक प्रयोजन नहि अछि। मुट्ठी भरि लोक सँ जनपदक निर्माण नहि होइत अछि। आ सुभाष ओहि जनपदक खिस्सा कहैत छथि जे अपन संपूर्ण गरिमा मे मिथिलाक जनपद अछि। अपन लाव-लश्कर, अपन भाषा-संस्कार, अपन सभ्यता-संस्कृति सँ लैस। सुभाष चंद्र यादव पर लिखैत हमरा बेर-बेर हिंदीक महान कवि त्रिलोचनक ई पंक्ति मोन पड़ैत अछि-'उस जनपद का कवि हूँ, जो नंगा है, भूखा है, दूखा है।' हमरा

सभ जनैत छी जे जनता कहियो पराजित नहि होइत अछि। पैघ सँ पैघ विपत्ति केँ सहैत ओ जीबैत अछि। विपत्तिसँ जूझैत अछि। श्रम करैत अछि आ श्रमक अनवरत आ विभोर करयबला सुगंधसँ एक अद्‌भुत संसारक निर्माण करैत अछि। सुभाष एहि श्रम, एहि सुगंधसँ परिचित छथि आ ओहि श्रमशील जनपदक महागाथा केँ कखनो कथामे तँ कखनो उपन्यासमे व्यक्त करैत छथि।

सुभाष चंद्र यादवक असल पहचान यैह थिक। साधारण बगय-बानि बला लोक, साधारण जीवन जीबैत, जाहि भाषाक प्रयोग अपन घर-आँगनमे करैत अछि, अपन सुख-दुखमे करैत अछि, सुभाषक रचनामे वैह भाषा स्वत:स्फूर्त रूपें अबैत अछि। एहि लेल सुभाष कोनो प्रयास नहि करैत छथि अपितु ई सहजताक संग अबैत अछि। यैह सहजता सुभाषक निजतो थिक आ विशिष्टता सेहो।

सुभाष स्वयं भाषाविद् छथि। अनेक भाषाक जानकार छथि। बहुत गंभीरताक संग अनेक देशी-विदेशी भाषाक ज्ञान अर्जित कयलनि अछि। तैं अपन रचना-संसारमे ओ भाषा संबंधी कोनो चूक नहि होब' दैत छथि। हुनका भीतर मिथिलाक सामान्य लोकक हृदय आ मन-मस्तिष्कमे धड़कैत भाषाक जे संसार निर्मित अछि, ओ अपन कथा-रचनामे तकरा व्यक्त करैत छथि आ यैह हुनक श्रेय थिक।

सुभाष जाहि समाजमे अपन संपूर्ण जीवन बितौलनि अछि, जाहि समाजक सुख-दुखमे ओ सहभागी रहलाह अछि, ओहि बहुलांश समाजक जीह पर जे भाषा अठरैत-मठरैत रहल अछि, तकरा व्यक्त कयनिहार कथाकार सुभाष अपन भाषाक कारणे कोनो दर्प नहि पोसैत छथि। भाषा हुनक रचनामे सहज संस्कारक रूपमे व्यक्त होइत अछि।

हमरा ई मानबामे कोनो असौकर्य नहि अछि जे मैथिली साहित्य मे सुभाष पहिल बेर विराट फलक पर ओहि जनपदक भाषाक रूप-दर्शन करौलनि जे एखनधरि साहित्य प्रदेश लेल वर्जित आ निषिद्ध छल। साहित्यक क्षेत्रमे एहि प्रकारक क्रांतिकारी आ आवश्यक परिवर्तन लेल सुभाष सदैव मोन राखल जयताह।

'गुलो' नामक उपन्यास मे सुभाषक भाषा-संबंधी ई सौंदर्य अपन संपूर्ण छवि-छटा आ निखारक संग प्रकट भेल अछि आ पहिल बेर आखिरी विपन्न मनुक्ख आ तकर जनपदक भाषा साहित्य मे सत्तासीन भेल अछि।



कोनो-कोनो कृति चमत्कृत क' दैत अछि, बाहर-भीतर सभतरि। जे सुभाष चंद्र यादवक रचनात्मकता सँ परिचित छथि, हुनका लोकनि केँ हुनक नव आ पहिल उपन्यास 'गुलो' अद्‌भुत लगतनि। शीर्षक धरिमे संक्षिप्तीकरणक निजता। ई उपन्यास चमत्कृत तँ करिते अछि, कखनो अवाक् सेहो क' दैत अछि। आ ई तखन घटित होइत छैक जखन पाठक उपन्यासमे धँसैत अछि। एकटा नव आ टटका परिदृश्य सोझाँमे पसरल भेटैत अछि। थोड़ेक परिचित, थोड़ेक अपरिचित। अपरिचयक ई संसार लगले परिचयमे बदलि जाइत अछि आ बहुत अप्पन आ आत्मीय सन लगैत अछि।

किछु कृति इतिहास बदलि दैत अछि, परंपराक इतिहास। ओ आत्मावलोकन लेल आलोड़ित-विलोड़ित करैत अछि आ अपन नव परिवेश, नव आँगन मे सोझे चलि अयबाक आमंत्रण दैत अछि। परंपरित ज्ञानक बन्हनकेँ तोड़ैत अछि, अतिक्रमित करैत अछि आ नव बहसक, नव विमर्शक, नव आलोचनाक मांग करैत अछि। किछु कृति लेल नव भाषा शास्त्र, नव आलोचना शास्त्रक निर्माण करय पड़ैत छैक।

'गुलो' एहने उपन्यास थिक। सभ किछु शांत, सभ किछु स्थिर। मुदा पहाड़ी नदी जकाँ वेगवान। नदीक ई वेग पाठक अपन हृदयमे अनुभव करैत अछि। गुलो सामान्य जनजीवनसँ उठाओल एक पात्र थिक। ई संपूर्ण उपन्यास गुलो आ ओकर चतरल परिवेशक कथा कहैत अछि। गुलोक परिवार, गुलोक सर-संबंधी, गुलोक परिचितिक आ ओकर लगपासक संसार—यैह एहि उपन्यासक मूल मे अछि।

गुलो दुख-दरिद्राक मारल अछि। ओकर छोट-छोट दुख, ओकर छोट-छोट सुख आ ओकर दुनियाक निजता एहि उपन्यास मे व्यक्त भेल अछि। गरीबी आ ओकर अंतहीन विपत्ति, जे गरीबी आ विपन्नता सँ उपजल अछि, ओकरा कखनो बइमान सेहो बना दैत छैक। मुदा ई एहन बइमानी थिक जकरा सँ मनुक्ख कखनो-कखनो अपन अस्तित्वक रक्षा करैत अछि।

उपन्यासकार जाहि परिवेशक चित्रण कयलनि अछि ओ ततेक परिचित आ आत्मीय बनि पड़ल अछि जे ओकर रेशा-रेशाक महीन बुनावटि धरि अभरि केँ पाठक धरि अबैत अछि। गाम-घरक एहन आत्मीय आ सहज चित्रण दुर्लभ अछि। ई उपन्यासकारक निजता आ हुनक विशिष्टता थिक।

ओ ओहने पात्र आ परिवेशक चयन करैत छथि जे हुनक अंतस्तल मे रचल-बसल रहैत अछि।

एकटा उदास, करुण, निर्गुण राग मे बहैत ई उपन्यास जीवनक यथार्थ कें उघाड़ैत अछि। जतय जीवन छैक, जीवंतता छैक, पात्र सभमे प्राण रचल-बसल छैक मुदा आर्थिक विपन्नताक कारणे सभ किछु हहरल छैक। मिथिलाक सामान्य जनजीवनक अधोगतिक महागाथा बनि गेल अछि ई उपन्यास।

मिथिलाक एक विशिष्ट पर्व तिला संक्रांति सँ ई उपन्यास आरंभ होइत अछि आ लगले सामान्य जनजीवनक दैनिक चर्या लग आबि जाइत अछि। पर्वक सुगंध आ पर्वक उमंग ओकरा लेल, जकरा थोड़ेक सकरता छैक, सामर्थ्य छैक। ओकरा लेल की, जकर सभकिछु उपासे पर, उधारे पर चलैत छैक—'लाइ बनबै मे बड़ खरचा छै। पाइ नै छै जे बना सकत।'

गुलो, जे एहि उपन्यासक मुख्य पात्र थिक, सदति अथाह चिंतामे पड़ल रहैत अछि। जीवनक जोड़-घटाव-गुणा-भाग करैत ओकर जीवन चलि रहल छैक। बपौती संपत्तिक नाम पर—'बाप-पुरखाक छोड़ल और कुइछ नै छै। गुलो अथाह चिंतामे पड़ल रहइ-ए। ओकरा कहियो कोय हँसैत नै देखने हेतै।' उपन्यासक ई पाँति कतेक मर्मांतक अछि। ई पाँति एक एहन पीड़ाक जन्म दैत अछि, जकर विश्लेषण कठिन थिक। जीवन सँ हँसी कतय बिला गेल अछि? हँसी कें ताकब, तकर चिंता करब आ ओहि परिस्थिति कें गुनब, जे मनुक्खक प्राकृतिक हँसी धरिकें छीनि लैत अछि, उपन्यासकारक चिंता बनि गेल अछि।

गुलोक बेटी रिनियाँक सुंदरता आ ओकर खुजल चरित्रक केहन मोहक वर्णन कयल गेल अछि—'लेकिन रिनियाँ तँ जुलुम छै। हँसै छै तऽ बुझाइ छै जेना फूल झड़ैत हो। फूले सन उज्ज्वल हँसी। रिनियाँक हँसी मे जादू छै। चुम्मक जकाँ खींचै छै। निश्छल निर्मल हँसी। इजोरिया जकाँ छिटकैत।'

स्त्री विमर्शक एहि दौरमे, जतय अनेक घटना-दुर्घटना, हत्या, बलात्कारक साक्षी बनैत अछि आजुक समय, ओतय दीन-हीन-लाचार गुलोक ई कथन कतेक महत्वपूर्ण भ' उठैत अछि, जखन ओकर भागिन अपन नव बिआहलि कुरूप कनियाँक मादे कहैत अछि—'लड़की कए लोग दूसइ छै।' गुलो ओकरा धोपैत कहैत छैक—'खबरदार! एहन भासा नै निकाल। जकर हाथ पकड़ि लेलही, घर आनलिही; ओकरा सए बढ़ि कए और कोय नै। वएह घरक लछमी छियौ...।' ई वैचारिकता गुलोक व्यक्तित्वक दृढ़ता थिक जे ओकरा महत्वपूर्ण बनबैत अछि। रहरहाँ देखल जाइत अछि जे तथाकथित भद्र समाजमे दहेज लेल, कनियाँक कुरूपताक कारणे अथवा एहन-एहन अनेक कारणे स्त्रीकें जीबिते आगि पर जरा देल जाइत छैक, घरसँ भगा देल जाइत छैक, पीड़ित-प्रताड़ित कएल जाइत छैक मुदा गुलो आ गुलो सन जीवन जीबय बला बहुसंख्यक समाजमे एहन अमानवीय दुर्घटना कम, अत्यल्प घटित होइत छैक। यैह जीवनक महानता थिक। जीवन जीबाक महानता थिक। गरीबी, विपन्नता आ आर्थिक दुश्चिंता मे पड़ल एहि समाजक जीवन शैली, स्त्रीक प्रति आदर-मान आ निरंतर लड़ैत-झगड़ैत, फेरसँ सहज आ सामान्य जीवन जीबाक ऊहि एहि निम्नतर समाजकें महत्वपूर्ण बनबैत अछि। जीवन जीबाक निरंतरता एहि समाजकें सभ तरहक कुरूपता आ विद्रूपता सँ बचबैत छैक। एहि तथ्यकें उपन्यासकार बहुत सहजताक संग चित्रित क' सकलाह अछि।

ई उपन्यास ओहि समाजक कथा थिक, जतय श्रमकें सर्वाधिक महत्व देल जाइत अछि आ अनथक श्रमेक कारणे जीवन जीयब संभवो छैक। गुलोक छोट बेटा छोटुआ, बेटी रिनियाँ, पुतोहु कंदाहावाली आ पत्नी बेला वाली सभ अपन-अपन हिस्साक श्रम करैत अछि आ जीवनक निर्वाह करैत अछि।

अपन भागिनक विवाहमे गुलो बेटी रिनियाँक संग जखन जाइए तँ ओतय जेठकी बेटी रूनियाँ सेहो आयल रहै। रूनियाँ जिद करैत अछि जे छोटकी बहिन थोड़ेक दिन ओकरा संग ओकर सासुर चलय मुदा रिनियाँ नहि जाइत अछि आ कहैत अछि—'हम नै जैबो गै बहीन। लोग कहत पेट पोसै लए आयल छै। बाप रोगाह भाए गेलै, दिन टगि गेलै तें ने तू जाइ लए कहै छिही? नै जेबौ गै बहीन, नै जेबौ।'

गुलो चकित-विस्मित होइत अछि। आखिर एतेक छोट वयसक रिनियाँ एतेक दुनियादारीक बात कोना बुझैत अछि। ई बात निर्विवाद थिक जे जीवनक अनुभव बुद्धि आ ज्ञानमे वृद्धि क' दैत छैक आ ओकरा ठोस बना दैत छैक। रिनियाँ अपन परिवारक दुनिया सँ परिचित अछि, पारिवारिक दिनचर्या आ परिस्थिति सँ परिचित अछि आ अत्यंत व्यावहारिक अछि। ई व्यवहार ओकर चरित्रमे देखार होइत अछि।

रिनियाँ सरकारी लाभ लेल स्कूलमे नाम लिखौने अछि, से पोशाक राशि लेल ओकरा पाँच सय टाका सेहो भेटैत छैक मुदा गुलो ओहि टाकाकें खर्च क' दैत अछि। रिनियाँ कें ओहिसँ एकहु टाका नहि भेटि पबैत छैक। घर-गृहस्थीक चिंता-दुश्चिंतामे पड़ल गुलो ओहि टाकाक उपयोग घरक आन बेगरतामे क' दैत अछि। जतय पेट भरबाक आ कोहुना जीवन जीबाक लेल आयास कर' पड़ैत हो, ओतय बाल-बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइक प्राथमिकता बदलि जाइत छैक। पहिने अस्तित्व रक्षा, पहिने पेट, पहिने भूख—यैह जीवनक प्राथमिकता भ' जाइत छैक। रिनियाँ कें जखन पाँचो टाका बाप नहि दैत छैक तँ ओ गुलोकें उकटि क' राखि दैत अछि। गुलो लेल एहन स्थिति आयल पानि, गेल पानि, बाटे बिलायल पानि जकाँ होइत छैक। रहरहाँ एहन बोल-कुबोल सहबाक आ सुनबाक ओ अभ्यासी भ' गेल अछि।

सामान्य आदमीक जीवन अद्भुत होइत अछि। विवाहमे रिनियाँ सोनक गेल जे एक निछच्छ देहात थिक। ओतयसँ आबि ओ एक-एक खिस्सा माइ आ भाउजकें सुनबैत अछि। ओ रेलगाड़ी धरि नहि देखने अछि, चढ़बाक बात तँ दूर रहओ। सोनक ओकरा कोनो तीर्थ सन बुझाइत छैक। एक्कैसम शताब्दीक एहि समय मे, एहन लोक, एहन लोकक समूह छैक जे जीवनक गति-प्रगतिक प्रति कतेक अपरिचित अछि। विस्मयसँ भरल एहन मनुक्ख सभक विडंबना बूझल जा सकैत अछि।

एहि उपन्यासमे अनेक-अनेक पात्र अछि आ सभ पात्रक अपन-अपन चरित्र छैक। चरित्रक स्तर पर उपन्यासकार एक एहन मेंही रेखा खिंचैत छथि जे पात्रक सर्वांग देखाब दैत छैक। अनवर आ बरजेशक चरित्र उपन्यासकारक एक्के वाक्यमे देखार भ' जाइत छैक जखन ओ सुखबाक मायक इलाज लेल उकस-पाकस करैए। अनवरकें बूझल छैक जे बुढ़िया (सुखबाक माय) लग पाइ छैक। ओकर कोनो प्रयास निरर्थक नहि हेतैक। ओ बुढ़िया मे जे लगाओत, तकरासँ बेसी ओ ऐंठि लेत। तें ओ बीमार भेल बुढ़ियाक सेवा-सुश्रुषा करैत अछि आ ओहि बुढ़ियाक पक्षमे ठाढ़ होइत अछि। सभक अपन-अपन दुख-धंधा छैक, चतुराइ छैक। सभ किछु एहि उपन्यासमे स्पष्ट छैक। कतहु कोनो दुराव-छिपाव नहि, कोनो गोपन नहि। सभ किछु उघारल छैक। खुजल छैक। आर-पार छैक।



आजुक जीवन आ आजुक समाज बहुत किछु बिसरि गेल अछि अथवा आधुनिकताक चाक-चिक्यमे बिसरि जयबाक स्वांग करैत अछि। हमर सबहक आबादीक एक पैघ हिस्सा जाहि प्रकारक जीवन जीबि रहल अछि, सुभाषक 'गुलो' ओहि जीवनक कथा कहैत अछि। से एतेक सहजताक संग, एतेक विश्वसनीयताक संग जे पाठक एहि उपन्यासकें पढ़ि क' ओही वास्तविक आ सरल-सहज दुनियाकें फेरसँ जान' चाहत जे हमरे सभक जीवनक समानांतर एक एहनो जीवन एहि मिथिला अथवा भारतक भूखंड पर साँस ल' रहल अछि आ अपन अस्तित्वकें बचयबाक प्रयासमे संघर्ष क' रहल अछि।

आइकाल्हि चुनाओ मे जेहन प्रचार-प्रसार आ झिक्का-तीरी, धूर्त्तता, हरमजदगी आ जेहन-जेहन षड्यंत्र कयल जाइत अछि, छोट-छोट प्रलोभनक बल पर जाहि तरहें जनतंत्रकें नाँगट-उघाड़ कयल जाइत अछि, तकरो एक बानगी एहि उपन्यासमे देल गेल अछि। लोक कोना बिकाइत अछि आ अपने गाम-घर, टोल-पड़ोसक लोक जाहि तरहें देखार-चिन्हार होइत अछि, तकरा कम्मे शब्दमे एहि तरहें व्यक्त कयल गेल अछि जे अत्यंत विश्वसनीय आ यथार्थ लगैत अछि। हमरा अहाँक आँखिक आगाँ कोनो घटना कोना साकार भ' जाइत अछि, कोना ओ स्वरूप ग्रहण करैत अछि, तकर बानगी एहिमे देखल जा सकैत अछि।

एक दूपहर रिनियाँ आ कंदाहावाली मे झगड़ा की होइत छैक, गुलोक परिवारक परिदृश्य बदलि जाइत छैक। सभ रूसल-फूलल। सभ अपन-अपन जगह ध' लेलक आ भूखले सूति रहल। भूख सँ ककरो निन्न नहि भ' रहल छलै मुदा सभ सूतल रहबाक स्वांग करैत अछि। मुदा बेलावाली उठि क' चूल्हि लग सब व्यवस्था करैत अछि आ कंदाहावाली कें रोटी पका देबाक आग्रह करैत अछि। रोटी पाकि गेलाक बाद सभ थोड़-बहुत खाइत अछि आ राति कटैत अछि। बेलावालीक ई संवेदनशीलता अद्भुत अछि कियैक तँ ओ जननी अछि। तथाकथित भद्र समाजमे एतबे टा घटना की सँ की क' दैत अछि मुदा सामान्य लोकक घरमे एहन घटना रहरहाँ होइत अछि आ फेर एक सामान्य दिनचर्या शुरू भ' जाइत अछि। कंदाहावाली सुजीत के लाए कें ल' क' एहि घटनाक बाद अपन नैहरि चलि जाइत अछि आ गुलोक परिवार सुन्न भ' जाइत अछि। दुनूक

अनुपस्थितिसँ परिवारमे जे शून्यता अबैत अछि, तकर वर्णन सांकेतिक अर्थमे कयल गेल अछि, से अद्‌भुत अछि।

गुलोक जेठकी बेटी रूनियाँक देओर नेरहू एक दिन लेल अबैत छैक तँ रिनियाँ असमंजस मे पड़ि जाइत अछि। जे ई एतय पहुनाइ करत तँ रहत कतय, सूतत कतय? घर-दुआर निफाह भेल छैक। नेरहू बजैत बहुत कम अछि, रिनियाँ दिस तकैत रहैत अछि, मुस्की छोड़ैत रहैत अछि। ओ अपन मूक प्रेम प्रदर्शित करैत हो जेना। मुदा रिनियाँ पकठोस अछि आ नेरहूक एहि तरहें ताकब ओकरा नीक नहि लगैत छैक तैं ओ अपन मायसँ जिज्ञासा करैत अछि जे नेरहू जेतौ कि रहतौ? ओकर मुँह देखि रिनियाँकें डर होइत छैक।

समय बदलैत छैक आ कंदाहावाली एक नव स्वरूप मे घुरि क' अपन सासुर अबैत अछि। संग मे रहैत अछि सुजीत। गुलोक घर फेर गुलजार भ' जाइत छैक। कतेक माससँ भंगठल कल ठीक कराओल जाइत अछि, घरक ऊपर आ टाट पर पन्नी साटल जाइत अछि, बजारसँ उसना चाउर मँगाओल जाइत अछि। एक नव प्रकारक उत्साह आ उछाहक संचार होइत अछि। गुलोक टूटल-उखड़ल परिवार एक सम पर आबि जाइत अछि। सभ किछु गतानल आ व्यवस्थित। सुरेबगर। कखनो-कखनो छोट सन सुख, कतेक पैघ-पैघ दुखकें काछि क' फेकि दैत अछि। जीवन भरिसक एकरे नाम थिक। ई एहन दुनियाक सुख थिक जकरा एहने जीवन जीबय बला लोक भोगि सकैत अछि। ओहन लोक सभ नहि जे दुख-चिंता-व्यथा कें पोटरी बान्हि माथ पर उठौने चलैत अछि सभ दिन।

सुजीत, जे एक छोट सन बच्चा अछि, अनवरक दोकान पर पहिनो जाइत छल आ बालसुलभ चंचलताक संग, निधोख भए पाइ मँगैत छल। आइ फेर ओहने दृश्य उपस्थित अछि। अपन मातृकसँ अयलाक बाद किछु दिनमे सुजीतक धाख टूटि गेलै। ओ अनवर लग जाइत अछि आ अपन हाथ पसारि कहैत अछि—'हौ, टाका दएह!' सुजीत एखने सँ आगाँक जीवनक अभ्यास मे लागल अछि जेना।

सुभाष चंद्र यादवक उपन्यास पर विचार करैत काल अनायासे ध्यान जाइत अछि जे हुनक रचनाकार अपन लेखन लेल केहन विषय वा कथ्यक चुनाव करैत अछि। जनपक्षधरता हुनक रचनाक प्राण-तत्व थिक। भाषा सिद्ध उपन्यासकारक शब्द-साधना आ विलक्षण सृजन-सामर्थ्य हुनक



उपन्यासकें, उपन्यासक पात्र सभकें आ विषय-जगतकें बहुरंगी यथार्थ सँ भरलक अछि आ एहन औपन्यासिक सृजनक प्रमुख आधार हुनक वैविध्यसँ भरल जीवनानुभव थिक। मानवीय सरोकार सँ जुड़ल हुनक उपन्यास समकालीन भारतक वृहत्तर मानवीय जीवन आ तकर भावबोधक सारभूत अभिव्यक्ति बनि गेल अछि।

14 जनवरी, 2015
तिला-संक्रांति

**केदार कानन**

# गुलो

आइ तिला सकरांति छिऐ। रिनियाँ गीत गाबैत अंगना नीप रहल छै। बुझाइ नै छै कोन गीत छिऐ। लेकिन सुर मधुर छै। रिनियाँ बहुत उमंग मे छै। अंगना भाए गेलै तऽ बाहर दोकान नीपय आयल। पानिक फाहा जकाँ ओस गिर रहल छै आ पछिया हवा चलै छै। बहुत जाड़ छै। रिनियाँ खाली सलवार आ फराक पहिरने-ए। ओकर माय चिचिआइ छै-'माय गे माय! ई छौड़ी हमरा जीअय नै देत। गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।'

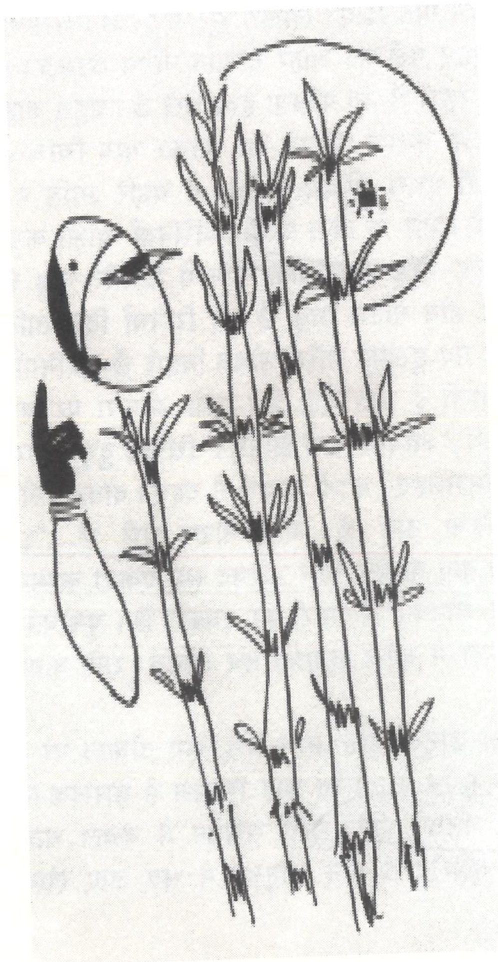
'नै ओढ़ै छी। भरि के लेटा जेतै।'—रिनियाँ खौंझा कए कहै छै आ माटिक ढेला गूड़ि-गूड़ि बाल्टीवला पानि मे खसबैत जाइ छै। दोकानक आगू सड़क पर तीन गोटय ठाढ़ छै आ रिनियाँ दिस ताकि रहल छै। भरिसक फराक सए हुलकी मारैत जोबन निहारै छै। रिनियाँक बाप गुलो आ माय बेलावाली ई बात बुझै छै। गुलो ओकरा पर बमकै छै—'गै छौड़ी! छोड़लिही? आ कि दियौ झापड़।' रिनियाँ दुनू तरहत्थी सए ढेला रगड़ि पानि मे मिलबइए। कोनो जवाब नै दइए। दोकान नीपय लागइए। लोग सब ओहिना ठाढ़ छै। एक गोटय पूछै छै—'इएह कम्मल भेटलह?' गुलो कए काल्हि नगर परिषद सए एकटा कम्मल भेटल रहै। कम्मल काठक छोटका अलमारी पर राखल छै। पुनरका धोती-साड़ी कए सीबि कम्मल मे खोल लगायत तब ओढत। राति कतबो जाड़ भेलै नै ओढलक।

गुलोक बेटा छोटुआ मुँह-हाथ धोइ कए दोकान पर आयल। लेट सए उठइ-ए। ससपेन मे खौलैत चाह गिलास मे ढारलक। गोंठ गिलास चाह। तखैनिए गहिकी एलै। गुलो ससपेन मे बचल चाह गिलास मे ढारलक। कम बुझेलै तऽ कने छोटुआ मे सए लाए लेलक। छोटुआ रूसि गेलै।

गुलो कए तामस उठलै—'साले देखबहक? एक्के ससपेन मे मुँह तोड़ि देबह। गहिकी ठाढ़ रहतै?'

छोटुआ मुँह बिधुएने ठाढ़ रहल आ चूल्हि पर हाथ सेदैत रहल। गुलो ओकरा दू गो टका देलकै—'जो लड़ुआ कीन ले। और चाह दै छिऔ।'

गहिकी गुलोक पड़ोसिए छिऐ। नाम छिऐ राजू। राजू भोर मे रोज गुलोक दोकान मे चाह पीअइ-ए। उधारे। चाह पी कए जाय लागल तऽ गुलो पाइ मांगलकै—'हे रे रजुआ! की भेलौ? दे ने।'





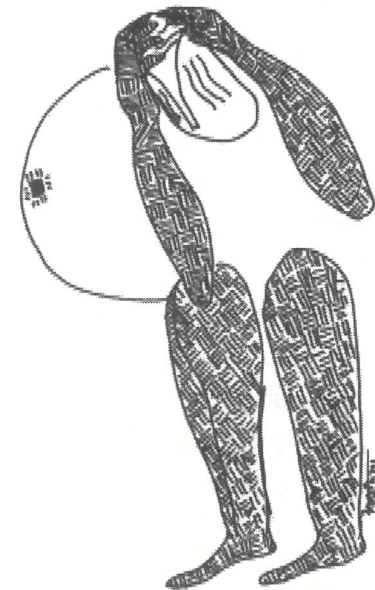
'घूरि कए आबै छिअह। दस बजे।'

'कहलिही रहय जे भोरे दाए देबह। आब कहै छिही दस बजे! अच्छा जो। दसो देख लै छिऔ।'

अखनुका लगा कए पनरह गो चाह भाए गेलै। गुलो जोड़इ-ए। पनरह पचे पचहत्तर। रजुआ कहने रहै एगो नमरी दाए देबह। आब जे करै।

पाँच-छह दिनक छाल्ही जमा भेल रहै। आइ रिनियाँ ओकरा टांसलकै। सौ ग्राम घी निकलल हेतै। खिचड़ी मे खायत। लाइ बनबै मे बड़ खरचा छै। पाइ नै छै जे बना सकत।

गुलो कए दू गो बेटा आ दू गो बेटी छै। एकटा बेटा आ एकटा बेटीक बियाह भाए गेल छै। बाकी दुनू अखैन छोट छै। बेटी रिनियाँ बारह-तेरह साल के आ बेटा छोटुआ दस-एगारह के हेतै। रिनियाँ छट्ठा किलास मे पढ़ै छै। जहिया सए माय नाचर भाए गेलै तहिया सए इसकूल कम्मे जाइ छै। अंगना-घर, भानस-भात आ दोकानक टहल-टिकोरा करै छै। छोटुआ साफे ने पढ़लकै। आब पलाइ मिल मे साइठ टके रोज पर काम करै छै।



‘हमरा चिन्है छिही ? ने चिन्है छिही तऽ चीन्ह ले। हम छिऐ गुलो मंडल। अही चौक पर घर छै। हमरा संगे ठेठपनी केलही तऽ बूझि ले। हम छिऐ गुलो मंडल।’—ककरो पर खिसिआयल तऽ गुलो इएह कहै छै।

पचास-पचपन सालक गुलो लिकलिक पातर-ए। चाह बेचइ-ए। दोकान पर बैठल-बैठल खोंखी करैत रहइ-ए। दम्मा छै। घरनियो रोगाहि छै। ओकरो दम फुलैत रहै छै। ऊ दोकानक एक कात मे बैठल रहइ-ए। कोनो काज नै करइ-ए। दोकान टुकदुम-टुकदुम चलै छै। बस डेढ़-दू सेर दूधक खपत। आ सेर तीन पौवा दूधक चाह तऽ ऊ सब अपने पी जाइ-ए। ओकर परिवार मे सब चहक्कर छै। दू बेर भोर आ दू बेर साँझ चाहबे करी।

गुलो पहिने गोंठ सिपौल मे रहै। आब कोसी चौक पर रहइ-ए। गोंठ मे मरौसी बासडीह रहै; घर रहै। गुलोक बाप रेलवे मे पेटमेन रहै। गुलो आ गुलोक दुनू बहीन छोटे रहै, तबे माय मरि गेलै। गुलोक बाप मुनीलाल पर बिपति पड़ि गेलै। नौकरी करय कि बाल-बच्चा कए पोसय ? बनरजी साहेब सहरसा मे रेलवेक बड़ा बाबू रहै। बड़ा बाबू लए मुनीलाल सिपौल सए माछ लाए जाइ। बड़का-बड़का जिंदा कबइ। तैं बड़ा बाबू कए मुनीलाल बड़ प्रिय। मुनीलाल नौकरी छोड़ि देत तऽ ओहन सुंदर माछ बड़ा बाबू कए के खिएतै ? बड़ा बाबूक मन नै रहै जे मुनीलाल नौकरी छोड़य। सेहो रेलवेक सरकारी नौकरी। लेकिन नौकरी नै छोड़त तऽ धीयापूता कए के पोसतै ?

बड़ा बाबू कहलकै—‘मुनीलाल, हम कोहने नेही सोकता तुम चाकरी कोरो ना चाकरी छोड़ दो। तोमारा मोरजी।’

मुनीलाल नौकरी छोड़ि देलक। घरे लग चाहक दोकान शुरू केलक। दोकानेक कमाइ सए धीयापूता कए पोसलक। बेटा-बेटीक बियाह केलक। सब कए सखा-संतान भेलै। जेठकी बेटीक भाग नीक नै रहै। तीन संतानक बाद ओकर मांग पोछाय गेलै। ससुरारि मे अभेला हुअय लागलै तऽ मुनीलाल बेटी आ नाति-नातिन कए अपने लग लाए आनलक। नाति कए चाहक दोकान पर राखय लागल। नाति चरफर-चलाक रहै। एक बेर मुनीलाल बेराम पड़ल तऽ नाति असकरे दोकान सम्हारि लेलकै। तहिया सए वएह दोकान चलबय लागल। बाद मे नाना कए ठकि कए बासडीह लिखा लेलक। गुलो कए ओतए सए भागय पड़लै। गोंठ सिपौल छोड़ि कए कोसी चौक, सिपौल आबि गेल। रोड कात मे बिहार सरकारक जमीन मे बसि गेल आ चाहक दोकान शुरू केलक। गुलो अपन भगिना कए कहियो माफ नै केलक। भगिना आब पैसावला भाए गेल छै आ गुलो कंगाल।

रेलवे मे रहैत मुनीलाल लोहा-लक्कड़क बहुत सामान बनबेने रहय। छोट-पैघ खुरपी, कोदारि, खंती, दबिया, कुड़हरि, भाला, बरछी। ई सब अखनियो गुलोक घर मे छै। इएह ओकर बपौती छिऐ। बाप-पुरखाक छोड़ल और कुइछ नै छै। गुलो अथाह चिंता मे पड़ल रहइ-ए। ओकरा कहियो कोय हँसैत नै देखने हेतै।

रिनियाँ बहुत सुंदर छै। अपन जेठकी बहीन रूनियाँ सए बेसी सुंदर। एक तऽ रूने ततेक सुंदर रहै जे ओकर बियाह ओहिना भाए गेलै। गुलो कए कुइछ रहबो नै करै जे दइतिऐ। दस गोटय कए खिया देलकै सएह बहुत। लेकिन रिनियाँ तऽ जुलुम छै। हँसइ छै तऽ बुझाइ छै जेना फूल झड़ैत हो। फूले सन उज्ज्वल हँसी। रिनियाँक हँसी मे जादू छै। चुम्मक जकाँ खींचै छै। निश्छल निर्मल हँसी। इजोरिया जकाँ छिटकैत। ओकर चलइ के, बोलइ के, ताकइ के ढंग लोग कए मोहि लइ छै। जे देखलक, देखिते रहि गेल।

रिनियाँ ककरो कुइछ कहि दइ छै। बात केहनो रहौ, खराप नै लागै छै। एक टका मे दू गो बीड़ी दइ छै। रिनियाँ कए दू गो देलक तऽ कहै छै—‘ईह बुढ़बा! दुइए गो!’ बीड़ीवला एकटा और दाए दए छै।

पावरोटी वला कए कहलक—‘हौ! तू बड़ कंजूस छहक!’ आ लहकलहा पावरोटी उठा लेलक। बेकरी वला टुकुर-टुकुर ताकैत रहल।

ककरो केला खाइत देखलक तऽ बाजल—‘भैया, अपने टा खाइ छहक!’ आ ऊ एगो केला दाए देलक।

रिनियाँ कए चप्पल नै छै। अइ शीतलहरी मे खालिए पएरे दोकानक टहल-टिकोरा करइ-ए। दूर मे गड़ल कल पर सए पानि आनइए। चाह वला गिलास धोइ-ए। कखनू चीनी तऽ कखनू पत्ती आनय दोकान जाइ-ए। पएर ठरि कए लोह भाए जाइ छै। कहियो छोटुआक चप्पल पहीर लेलक तऽ दुनू भाइ-बहिन मे मारिपीट भाए जाइ छै।

अंगना-घर मे झाड़ू देनाइ, बरतन मांजनाइ आ भनसा केनाइ रिनियाँक डूटी छिऐ। माय बैठल-बैठल अढबैत रहै छै। मायक अढायब रिनियाँ कए खराप लागै छै। ऊ तऽ अपने मने सबटा काज करिते छै। तइयो माए कंठ पर चढ़ल रहै छै। रिनियाँ पिनकि जाइ छै—'नै करबौ।'

'हे देखने जाइक अइ छौंड़ी कए!' माय कहै छै।

रिनियाँ रीख नै राखइ-ए। लगले काज मे भीड़ि जाइ-ए जेना कुइछ भेले ने हो। कतबो गारि, कतबो बात-कथा कहौ, रिनियाँ बिसरि जाइ-ए। आ अंगने सए नेहोरा करइ-ए—'बबा, कनीटा चाह हमरो दएह।'

'देखबहक छौड़िए! काए बेर पिबही गे!'—बबा तमसाइ छै।

रिनियाँ कोनो उतारा नै दइ-ए आ चुपचाप झाड़ू लगबैत रहइ-ए।

ओकरा इसकूल मे पाँच सय टाका भेटल रहइ। पोशाक राशि। दीदीजी कहने रहइ—'जुत्ता कीन लिहे।'

रिनियाँ पुछै छै—'बबा, कहिया कीन देबहक?'

'लीहे ने। कीन देबौ।'—बबा सब दिन इएह गप कहै छै। कहियो कीनइ नै छै।

एक दिन रिनियाँ कहलकै—'बबा, पाँच गो टका दएह।'

'की करबिही?'

'मेला देखबै।'

'ईह! बड़ भेली-ए मेला देखैवाली। एतए सए भागबे कि नै?'—बबा उखड़ि गेलै।

रिनियाँ पर रणचंडी सवार भाए गेलै। फुफकार छोड़लक—'पाँच सौ लाइब कए देलियह, सबटा चाटि गेलहक आ पाँच टका निकालै मे दाँती लागै छह!' गुलो फक पड़ि गेल। रिनियाँ हनहनाइत अंगना चलि गेलै।



3

जरना खातिर रिनियाँ गाछिए-गाछी बौआइत रहइ-ए। कहियो अमाठी, कहियो करची, कहियो पतलो-जे भेटल से लाए आनइए। गाछी-बिरछी मे जरना नै भेटल तऽ पलाइ वला मिल पर चलि जाइ-ए। पलाइ वला टुकड़ी सब बीछइ-ए। छोटुआ ओही मिल मे काम करै छै। ओकरा नीक नै लागै छै। रिनियाँ पलाइ वला टुकड़ी बीछैत रहै छै तऽ छोटुआ कए लाज होइ छै।

एक दिन भोरे-भोरे रिनियाँ भोकारि पाड़ि कए कानय लागल। ओकर पजरा मे छोटुआ एक मुक्का मारने रहइ। रिनियाँ कहैत रहलै निमकीन हम नै खेलियौ लेकिन छोटुआ कए बिसबास नै भेलै। मुक्का मारि देलकै। रिनियाँक रोदन सुनि कए गुलोक कोंढ फाटि गेलै। छौड़ी कए बेकसूर मारि लागि गेलै। छोटुआ पर तामस उठलै—'रे, साला! तू मारलिही किए? लहरले चेला दियौ चानि पर? साला, जेठ-छोट के एको पैसा विचार नै! कहैत रहलिए निमकीन मूस लाए गेल हेतौ। मगर ई सार बूझय तब ने!'

छोटुआ साँझे मे पाँच टका के निमकीन किनने रहय। दू-चारिटा खेलक आ बाकी कठही अलमारी पर राखि देलकै। सोचने रहय भोर मे चाह संगे खायब। जखैनिए देखलकै निमकीन नै छै, छुच्छे कागज छै, तखैनिए कानय लागल। ओकरा सोलहो आना बिसबास रहै जे रिनिए निमकीन खेलक-ए। रिनियाँ आइ निमकीन नै खेने हुअय, लेकिन ओकर आदत छै जरूर। जहाँ कोनो चीज देखलक कि टप दए मुँह मे धाए लेलक।

छोटुआ आठ बजे काम पर जाइ-ए। ओइ सए एक-आध घंटा पहिने सूति कए उठइ-ए। उठिते चाह पिबइ-ए। चाह संगे बिस्कुट, लड़ुवा या पावरोटी खाइ-ए। दोसर बेर रोटी संगे चाह पिबइ-ए आ काम पर चलि जाइ-ए।

आइ ओकर पहिले चाह राखल छै। आ ऊ रूसल ठाढ़-ए। कहै छै—'काम पर नै जेबै।'

गुलो छोटुआ दिस ताकैत रहइ-ए। काम पर नै जेतै तऽ एक दिनक रोज गेलै। साठि रुपैया मारल जेतै। साठि रुपैया मे गुलो एक दिन खेप लइ-ए।

'रौ, काम पर नै जेबही तऽ खेबही की?'—माय छोटुआ कए कहै छै।

छोटुआ कोनो जवाब नै दइ-ए। रिनियाँ कानिए रहल छै। लेकिन सुर मंद पड़ल जाइ छै। गुलो पचटकही निकालि कए छोटुआ कए दइ छै—'जो निमकीन कीन ले।'

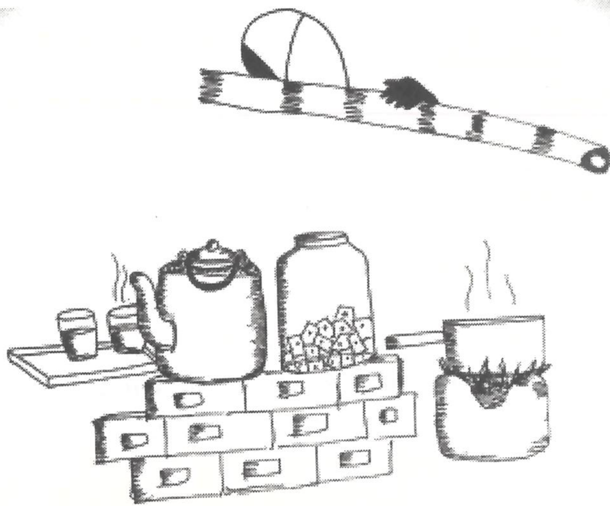
छोटुआ टाका नै लइए। कदुआयल ठाढ़ रहइ-ए। गुलो टाका आगू मे राखि दै छै। गुलो रिनियाँ कए परबोधइ-ए—'चुप रह। तुहू कोनो कम नै छें। ई तऽ हरामी छेबे करै।'

कनी कालक बाद गुलो पचटकही उठा कए छोटुआ कए पकड़ाबइ-ए—'ले ने, चाह सरेलौ। लाए कए या ता चाह गरमा दइ छियौ।'

अइ बेर छोटुआ मानि जाइ-ए।

काम शुरू केनाइ छोटुआ कए दू मास भेलै। घर मे ओकर मानि बढ़ि गेल छै। आब सब चीज पहिने ओकरे भेटै छै। रिनियाँ कए सब दाब-दाब करैत रहै छै। माय कहै छै—'ओकरे कमाइ ने खाइ छीही।'

'हँ, बड़ कमासुत छौ। और कोय कमबै छै! और सब तऽ बैठले रहै छै!'—रिनियाँ बात उनटा दइ छै।





4

गुलोक जेठका बेटा अरजुन पनिजाब चलि गेलै। एक मास भेल हेतै। अइ ठाम रिक्शा चलबैत रहै। घर मे दस-बीस टाका दइ। और सब के दारू पी जाइ। बाप, माय, घरनी कतबो कहइ, तइयो दारू नै छोड़ै। आब पनिजाब मे कोनो सरदारजी के दोकान मे खटइ-ए। अइठाम गुलो लग ओकर घरनी कंदाहावाली आ तीन सालक बेटा सुजीत रहै छै। सुजीतो कए चाहक आदत लागि गेल छै। भोर-साँझ दोकान पर आबि कए कहलक—'ददा, हमरो चाह दएह।'

गुलोक पुतहु कंदाहावाली कए कोनो-कोनो काम भेट जाइ छै। कहियो मकइ कमबै ले गेल; कहियो गरमा रोपय गेल। एक दुपहरिया रहल तऽ तीस टका। भरि दिन केलक तऽ साठि टका भेटइ छै। सुजीत सए नुका कए जा पड़ै छै। जँ देख लेलक तऽ लटकि गेल। जा नै देलक। एक दिन तऽ माय खातिर सुजीत ओंघड़निया दिअ लागल—'माय गे माय! कतए चलि गेलही गे माय! हम नमहर हेबौ तऽ कमा कए खिएबौ गे माय।'

गुलो के आतरज होइ छै। ई सब गप छौड़ा कतए सीख लेलकै! फेर अपने कहै छै—'कलजुगिया बच्चा छिऐ ने!'

रिनियाँ पच-पच थूक फेकै छै। पेट मे चाली छै। इसकूल मे गोटी देने रहै। गोटी खेलकै तऽ दू गो चाली खसलै। बुझाइ छै और चाली छै। छौड़ी कतौ पच दए थूक फेक दै छै। गुलो कहइ छै—'जीभलाहि केहन छै! आक-धथुर कुइछ नै बूझत। जे भेटल से टप दए मुँह मे।'

नया साल दिन सेहो रिनियाँ सबटा माछ बोकरि देने रहइ। पहिनइ सए धमकी दैत रहै—'अल्हू-तल्हू बनलह तऽ हम थारी फेक देबह। मौंस खेबै।'

गुलो चुपचाप ओकर धमकी सुनि लेने रहय। कतए सए मौंस आनत से फुराइत नै रहै। ओकरा अपनो मौंस खेना बहुत दिन भाए गेलै। मकलुआ बड़की महजिद लग खस्सी काटै छै। गुलो मकलुआ कए पकड़लक—'हे रे, मकलू! हमरा आउर कए मौंस नै खेबै रे?'

'हाँ हौ, किऐ नै खेबहक।'

'पैसा छै जे किनबै? भोंटिए दे ने। जे पाँच-दस टका कहबिही से दाए देबौ।'

'अच्छा, आबिहह।'

लेकिन नया साल दिन जखैन गुलो बड़की महजिद लग गेल तऽ मकलुआ के कोनो पता नै। गुलो मुँह बाबि कए घूरि आयल। एगो मुसहरनी माछ बेचय जाइत रहै। गुलो हाक देलकै। मुंगरी रहै, लेकिन मरल। तइयो गुलो लाए लेलक। उधार माछ बनलै तए, लेकिन कोय नै खेलकै। माछ महकैत रहै। रिनियाँ तऽ बोकरिए देलक।

सब गुलो कए लूलू-थूथू केलकै—'की कहाँ बेसाहि लेलक। ने खायल सन, ने पीयल सन।'

गुलोक बगले मे अनवर एगो कठघरा मे बैठइ-ए। ऊ सुइया दै छै। एगो सुइया दइ के दस टका लै छै। ऊ गुलो कए कहै छै—'एकरा चाली के केपसूल दहक। सब चाली खसि पड़तै।'

गुलो इहो ने पुछै छै जे केपसूल के दाम कते छै। चुपचाप सुनि लइ-ए। पूछि कए की करत! रिनियो ने कहै छै जे कीन दएह। ओकरा कोनो परवाह नै छै। बस, पचपच थूक फेकैत रहइ-ए।

गुलोक ससुरारि बेला छै। बेला सए गुलोक सरहोजि आयल छै। ननदि सए भेंट करय। भौजी कए देखिते बेला वाली भोकारि पाड़ि कए कानय लागै छै—'आइ मन पड़लह! ई बुढ़बा तऽ हमरा मारि देलकह। एक्को पैसा के दवाइ नै दइ छह।'

सरहोजि गुलोक फज्झति करै छै—'ई गजपीआ हमर बहीन कए मारि देलक।'

गुलो पहिने बहुत गाजा पीऐत रहय। गाजा पीअय आ रिक्शा चलबय। गाजा पीऐत-पीऐत दम्मा उखड़ि गेलै। बेराम पड़ि गेल। शरीर सए नचार भाए गेल। रिक्शा छोड़य पड़लै। चाहक दोकान शुरू केलक जे टुकदुम-टुकदुम चलै छै।

गुलो भारी चिंता मे पड़ल-ए। नोत आयल छै। भगिना के बियाह छिऐ। नोत पूरय पड़तै। साड़ी, साया, बिलाउज आ दू सय एकावन टका दिअ पड़तै। नहियो-नहियो तऽ पाँच-छह सय के खरचा छै। कतए सए आनत? अही गुनधुन मे पड़ल-ए।

दू दिन सए पानि पड़ि रहल छै। एकोटा जरना नै छै। पलाइ मिल मे पानि लागल छै। टुकड़ी सब भीजल छै। सेहो बीछय वला नै। बरखा नै भेल रहितइ तऽ रिनियाँ कतौ ने कतौ सए जरना बीछ आनितिऐ। गुलो घरक सड़लहा खुट्टा छौड़ा कए दबिया सए फाड़इ-ए। आइ ओही सए भानस हेतै।

दू दिन सए चाहोक दोकान बंद छै। दूध वला घूरि गेलै। जरने ने रहै तऽ दूध लाए कए की होइतइ।

छोटुआक हफ्ता वला रुपैया आ कुइछ हथपैंच लाए कए गुलो कपड़ा कीनलक। रिनियाँ आ छोटुआ कए संग केलक आ भगिनाक बियाह मे सोनक चलि गेल। घर पर रहि गेलै बेलावाली, कंदाहावाली आ सुजीत। ददाक संग जाइ लए सुजीत बड़ कानल।

गुलो के चलि गेला के बाद कंदाहावाली जरना उपरेलक। दूध लेलक आ चाहक दोकान फेर सए शुरू केलक। जे कंदाहावाली आठ बजे उठैत रहय से आब पाँच बजे उठइ-ए। अंगना-घर करइ-ए; चाह बेचइ-ए; भानस करइ-ए आ दिन मे गरमा धान रोपय चलि जाइ-ए। गुलोक चलि गेला सए बेला वाली कए कष्ट भाए गेलै। दू राति सए छुच्छे रोटी खाय पड़ै छै। कंदाहावाली तरकारी नै बनबै छै। बेलावाली भरि दिन पोता के तकतान करइ-ए। ओकरा पोल्हा कए राखइ-ए। कोनो गहिकी आबि गेल तऽ चाह बना कए दइ-ए। हाथ थरथराइत रहै छै। डर लागल रहै छै चाह ने खसि पड़ै।

सोनक जाइते गुलो बाजल—'खबरदार! दारू पी कए कोय बराती नै जेतै। दारू पी कए जायत तऽ झगड़दन आ मारिपीट करत। सब इज्जत-परतिष्ठा माटि मे मिला देत। दारू पीनाइ होइ तऽ ओनय सए घूरि कए आबय आ जतेक पीनाइ होइ, ततेक पीअइ। कोनो रोकटोक नै।'

बराती कहरा पहुँचलै दस बजे राति मे। बाजा तऽ रहबे करै। छौड़ा सब डांस शुरू केलक। दरबज्जा लागैत-लागैत बारह बाजि गेलै। जनबासा मे

डाल-दौरा, सर-सनेस राखल गेल। गुलो एगो सराती कए कहलकै—'समधि के छिआह? हुनका जल्दी भेजू।'

समधि आधा घंटा मे पहुँचलै। मुँह कए गमछी सए लपेटने। गुलो कहलकै—'यौ समधि चिन्हब केना? मुँह पर सए गमछी हटाउ ने।'

समधि गमछी हटेलक। गुलो देखइ-ए समधीक मुँह हुक्का जकाँ। ऊ तखैनिये माथा ठोकि लेलक। लड़की नीक नै हेतै। एकटा गौंआ बाजलै—'बाप रे! लड़का तऽ राजकुमार सन छै। लड़का जोग लड़की नै छै।'

लेकिन आब तऽ कुइछ नै कएल जा सकइ-ए। गुलो कहलकइ—'समधि, ई सब डाल-दौरा लाए जाउ।'

डाल-दौरा मे चाउर, चूड़ा, लड्डू, खाजा आ केरा रहै। एक पातिल दही रहै। सामान चलि गेलै तऽ गुलो लड़का तिलकाबय कहलकै। पुरहित बाजल—'आब अहाँ सब लड़की तिलकाउ।'

गुलो कए तामस उठलै—'यौ, अहाँ बाभन छी कि चमार? पहिने गौरी के पूजा होइ छै कि शंकर के?'

'ई सब तऽ कहैत छथि जे लड़का के तिलक भऽ गेल छैक।'

'तखैन लड़कियो के तिलक भाए गेल छै।'—गुलो बाजल।

लड़की वला तिलक के सब सामान राखने रहय। खाली बदमाशी करैत रहय। गुलो कने तनल तऽ सब सोझ भाए गेलै। फेर लड़को के तिलक भेलै, लड़कियो के। खाना-पीना भेलै। ताजा रौह रहै। गोट-गोट बराती कए मूड़ा भेटलै। चारि बजे भोर मे बियाह भेलै। आठ बजे बराती विदा भेलै तऽ लड़की वला विदागरी लए तैयारे ने। कहइ साँझ मे विदा हेतै। गुलो कहलकै—'साँझ मे विदाइ करबै तऽ गाड़ी अहाँ कए करय पड़त। पाँचटा कुटुमो रहत तकरो स्वागत-सत्कार करय पड़त। जँ अइ ले तैयार छी तऽ कोनो बात नै।'

कन्यागत कए ई सब भारी बुझेलै। विदाइ काए देलक। नौ बजैत-बजैत बराती आ कनियाँ सोनक पहुँच गेलै। कनियाँ कए दोसराक घर मे राखल गेल। दिन-देखार कनियाँ अपन घर नै जा सकइ-ए। सएह रेवाज छै।

साँझ मे जखैन गुलोक बहीन कनियाँ देखलकै तऽ गुलो कए फटकारलक—'रौ, केहन उठा आनलिही!'

'हमरा कुइछ नै कह। जे देखै लए गेलौ आ पसिन केलकौ, तकरा कही। हम जे ठीक काए देने रहियौ तेहन अइ पाँच गाम मे एकोटा नै छौ। देखइ मे ओतबे सुंदर आ काम करइ मे तऽ बिजली रहै बिजली। लेकिन नै केलही जे एगारहे हजार दै छै। ई देलकौ एकतीस हजार। तुरंत गनि देलकौ। आ बेटो चट सिन जेबी मे राखि लेलकौ। ओतए हम की कहितिऐ जे हमरा लड़की नै पसिन-ए। बियाह नै करब? से कहितिऐ तऽ कोनो गज्जन बाकी रहितए? मारियो खइतौं आ बियाहो करय पड़ैत।'

बहीन चुप भाए गेलै। जकर बियाह भेल रहै से भगिना अगिला दिन मुँह बिधुएने लग मे आबि कए ठाढ़ भाए गेलै। कहलकै—'ममा! लड़की कए लोग दूसइ छै।'

'खबरदार! एहन भासा नै निकाल। जकर हाथ पकड़ि लेलही, घर आनलिही; ओकरा सए बढ़ि कए और कोय ने। वएह घरक लछमी छियौ। ओकरा नीक सए राखबिही तबे घर सुधरतौ। दोसर के बात मे रहबिही तऽ बिलटि जेतौ। कहय दही, जकरा जे कहनाइ छै। ओइ सए कुच्छो नै होइ छै।'—गुलो भगिना के धोपलक। भगिना चुप भाए गेलै।

अगिला दिन गुलो जाइ लए तैयार भेल। भगिना जिद करैत रहलै आइ रुकि जाह। गुलोक जेठकी बेटी रूनियाँ सेहो आयल रहै। ओकर मन रहइ रिनियाँ कए अपना ओइठाम लाए जाइ। ऊ रिनियाँ के सलवार-फराक नुका कए राखि लेलकै। लेकिन रिनियाँ बहीनक ससुरारि जाइ लए तैयार नै रहय। रूनियाँ कानय लागलै। रिनियो कानय लागल। दुनू बेटी कए कानैत देखि गुलोओ कए नै रहल गेलै। ओकरो कोंढ फाटि गेलै।

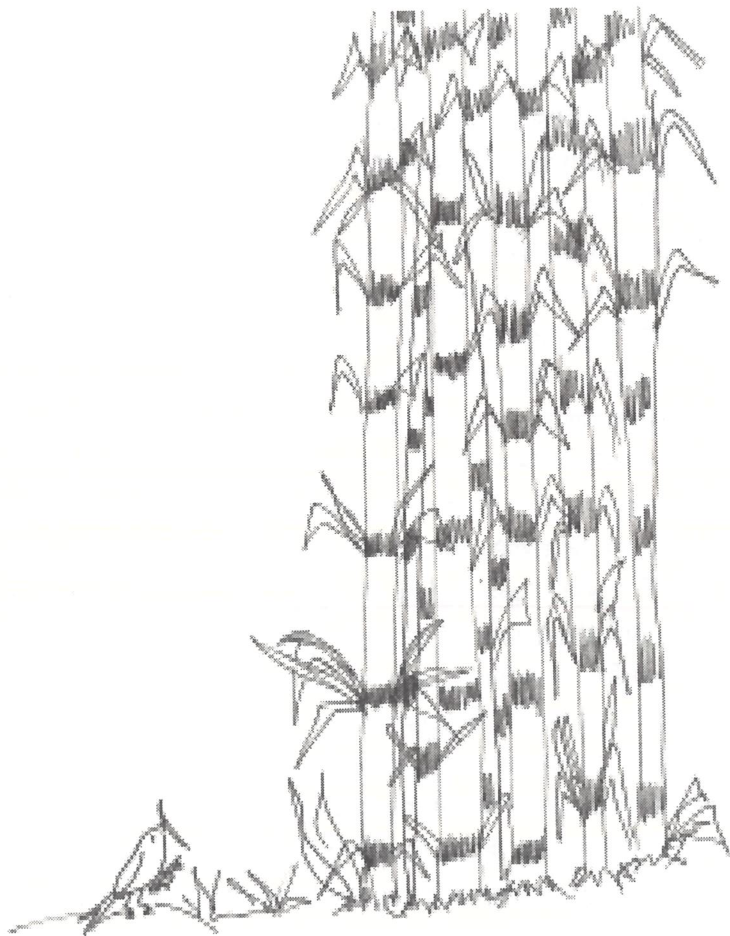
रिनियाँ बाजल—'हम नै जेबौ गे बहीन! लोग कहत पेट पोसै लए आयल छै। बाप रोगाह भाए गेलै; दिन टगि गेलै तैं ने तू जाइ लए कहै छिही? नै जेबौ गे बहीन, नै जेबौ।'

रिनियाँ ततेक कानल जे ओकर आँखि फूलि गेलै। गुलो कए छगुन्ता भेलै छौड़ी ई सब बात केना बूझि गेलै।

भगिना कहलकै—'ममा! नै रुकबहक तऽ जाह। हम कोनो दिन एबै। रिनियाँ आ छोटुआ लए कपड़ा सिपौले मे कीन देबै।'

रिनियाँ सोनक सए घूमल तऽ दू-तीन दिन धरि झुमका पिन्हने रहल। बीस टका के रहै, लेकिन एनमेन चानिए जकाँ लागै। सलवार-फराक आ झुमका सए सजल रिनियाँ कोनो शहजादी सन लागैत रहय। माय आ भौजी

कए रिनियाँ सोनक के खिस्सा सुनबैत रहल। के की बाजल, के रूसल, के झगड़ केलक। घर सए सटल बँसबारि मे राति कए केना नढ़िया आबि जाइ आ भूकइ। सब बेकछा-बेकछा कए सुनाबय। जेना कोनो तीरथ सए घुमल हो। रिनियाँ लेखें सोनक कोनो तीरथ सए कम नै रहै। ऊ तऽ अखैनधरि रेलगाड़ियो नै देखने-ए।







अइ हफ्ता छोटुआ पाँच दिन नागा केलक। एक सय टका भेटतै। सेहो भेटतै कि नै तकर कोनो ठेकान नै। बियाह मे जाइ सए पहिने एडभांस लेने रहय। जँ काटि लेलकै तऽ कुइछ नै भेटतै।

घरक खरचा कंदाहावाली चलबै छै। गरमा धानक रोपनी चलि रहल छै। कंदाहावाली रोज रोपै लए जाइ-ए। ओही सए घरक खरचा चलै छै।

अरजुन छह हजार करजा छोड़ि कए गेल-ए। लोग तगेदा करै छै। अनवर के मोबाइल पर कंदाहावाली घरवला कए सब बात कहै छै। अरजुन कहलकै चारि-पाँच दिन मे टाका पठेतै।

गुलो भोर-साँझ चाह बेचइ-ए आ दिन मे खेत ओगरइ-ए। मलिक डाकटर के चारि कट्ठा खेत बटइया करइ-ए। खेत मे रमरोहड़ि आ चिकना लागल छै। घसबाहनी सब उजारि दै छै। ओगरबाहि नै करत तऽ खेत सुन्न काए देतै। आरि पर कएकटा आमक गाछ छै। खूब मजरल छै! टिकला धरतै तऽ गाछियो के ओगरबाहि करय पड़तै।

गुलो के अंगना मे जे कल छै से बाउल फेकै छै। फिल्टर फूटि गेल छै। रिनियाँ बाल्टिए बाल्टी पानि आनइ-ए। कखनू ठकना के कल पर सए तऽ कखनू इनरा गानही के कल पर सए। पानि ऊघैत-ऊघैत रिनियाँ के डेन दुखाइत रहै छै। कखनू काल तऽ लागल जेना डेन उखड़ि जेतै। रिनियाँ नाक-मुँह फुलबय लागल—'हम नै आनबै। घर मे और कोय नै छै? हमहीं टा छिऐ?'

रिनियाँक इशारा छोटुआ आ कंदाहावाली दिस छै।

गुलो ने छोटुआ कए कहि सकइ-ए, ने कंदाहावाली कए। छोटुआ भेलै मरद-पुरुख आ तहू मे कमौआ। आ कंदाहावाली तऽ घरक इज्जत भेलै। ओकरा केना कहतै।

गुलो रिनियाँ कए पोल्हाबइ-ए—'की हेतै बेटा! कुइछ दिन और आनि

दहक। कल ठीक भाए जेतै। जहिना पिनसिल भेटतै, तहिना ठीक करा देबै।'

'तू तऽ एक नम्मर के झुट्ठा छहक! कहिया सए कहै छहक ठीक करा देबौ, ठीक करा देबौ। चारि महीना भाए गेलह, ठीक होइते छह।'—रिनियाँक गप सुनि गुलो ठक रहि गेल।

रिनियाँ बुझइ-ए ऊ कतबो देह-हाथ पटकत छोटुआ आ भौजी पानि नै आनतै। कतबो खराब लागौ पानि ओकरे आनय पड़तै।

गुलो सोच मे पड़ि गेल। कल उखाड़इ-गाड़इ के एक हजार लागतै। पाँच सय फिल्टरो मे लागि जेतै। कल ठीक करबइ के मतलब भेलै डेढ़ हजार टाका। ई डेढ़ हजार कतए सए आनत? पाँच महीना सए पिनसिल नै भेटल छै। दुनू परानी के मिला कए भेटतै दू हजार। दू हजार मे की-की करत? कल ठीक करायत की दूध वला कए देतै आकि घर ठीक करायत? चारक खढ सड़ि गेल छै। घर काए ठाम चुबै छै। चैत-बैसाख धरि नै ठीक करा सकल तऽ रहत कतए? गुलो कए कुइछ नै फुराइ छै।

काल्हि दूधवला बड़ फज्झति केने रहै। ओकर चारि सय छै। दूधवला मांगलकै तऽ गुलो भरोस दैत कहलकै—'देबौ, देबौ। कने थम्ह। सबूर राख। देबे करबौ। बैमानी नै करबौ। गुलो आइ धरि ने ककरो राखलकइ-ए, ने बैमानी केलकइ-ए। जो ने। अजुका दाए देलियौ ने।'

'तू सब दिन अहिना कहै छहक। देबहक नै तऽ भैसान कए की देबै? ऊ मानतै? नै देबै तऽ दूध देतै? आब नै मानबह। हमरा आइ दएह, अखैन दएह।'

'एते गोटय राखने छौ से कुइछ नै आ हम राखने छियौ तऽ जुलुम भाए गेलै! एते दिन सए दैत रहियौ ने? कहियो बैमानियो केलियौ? कहै छियौ तऽ बुझै ने छिही किए! जो ने, देबे ने करबौ।'—गुलो कहुना पिंड छोड़ेने रहय।

गुलो कए एक्केटा उपाय बुझाइ छै। जँ अरजुनमा दस हजार पठा दै तऽ सब काम भाए जेतै। लेकिन ऊ भेजतै! न्न। ऊ अपन बौह कए पठायत। चुप्पेचाप। गुलो कए भरि-भरि राति निन्न नै होइ छै।

छोटुआ कए हफ्ता भेटलइ-ए। अखैनिए लाए कए आयल छै। तीन सय टका। 'मर! एतने रे?'—गुलो जिरह करै छै।

'एतने देलकै।'—छोटुआ कननमुँह भेल कहै छै।

'काम केलही साढ़े चारि दिन आ देलकौ तीन सय! कहलिही नै?'



'कहलिऐ तऽ हौ। नै दैलकै तऽ हम की करबै?'—छोटुआ खौंझा कए कहै छै।

'आँय रे। ओभरटेम के कुच्छो नै देलकौ?'

'पचास टका देलकै।'

'नौ घंटा के पचास टका! साला दशरथबा खच्चर छै!' गुलो कए मिल मालिक पर तामस उठलै।

लेकिन बेलावाली कए अपन बेटे पर संदेह भेलै। देलकै कुच्छो आ कहै छै कुच्छो। ऊ अनवर कए सुना कए कहै छै—'बुझलखिन? अइ छौड़ा के मन मे कतरनी छै, कतरनी! ई हमरा आउर के कुच्छो करतै? न्न। करतै तऽ जेठके करतै।'

'अच्छा ठहर। हम अपने सए जेबै।'—गुलो बाजल।

'ठहरतै कोन चीज हौ? अखैनिए जाहक ने। ने तऽ ठिठुआ देतह।'—रिनियाँ कए बापक ढिली पसिन नै छै।

रिनियाँ खौंझायल रहइ-ए। ओकरा कखनू छुट्टी नै रहै छै। कखनू ई काम, कखनू ऊ टहल। ऊ चिंता मे पड़ल उदास रहइ-ए। इसकूल मे परिकछा छिऐ। कोएसचन के दसगो टाका लागतै। गुलो कए दसो टका नै छै जे देतै। रिनियाँ कखनू पढ़बौ नै करइए। परिकछा मे की लिखतै!

ऊ खाली पैसा खातिर इसकूल जाइ-ए। पोशाक राशि। साइकिल।

पलाइ मिल होली सए पहिनइ बंद भाए गेलै। मशीन खराप भाए गेल छै। ठीक होइ मे काए दिन लागतै, तकर कोनो ठेकान नै। छोटुआक रोजगार बंद भाए गेलै। आब ऊ भरि दिन किरकेट खेलाइ-ए आ रिनियाँ सए लड़ाइ-झगड़ा करइ-ए।

गुलो चिंता मे पड़ल-ए। आगू मे फगुआ पाबनि छै। हाथ पर एक्को टा पैसा नै। केना हेतै फगुआ? पुतौह लग कुइछ छै, लेकिन ऊ निकालतै तब ने। अनवर कए चाह दैत गुलो कहै छै—'अनवर भाय! फगुआ केना हेतै? जँ एक्को पौवा पोठिओ भाए जइतइ तऽ धीयापूता भात जरय खा लइतइ।'

अनवर कोनो जवाब नै दै छै। ऊ पहिने कएक बेर मदद केने छै। जाड़ मे गुलो आ बेलावाली दुनू बेराबेरी बेराम पड़ल। अनवर टाका देने रहै, दवाइ देने रहै, सुइया देने रहै। एक बेर माछ आ एक बेर मौंस किना देने रहै। गुलो घुरबै के नाम नै ले छै।

होली दिन राजिनदर डीलर माछ कीनैत रहै। मुसहरनी कठौत मे रौह आ गरचुन्नी लाए कए आयल रहै। गुलोओ ठाढ़ भाए गेल। राजिनदर पुछलकै—'गुलो, माछ लेबहक?'

'भैया, लइतिऐ तऽ, मगर पैसे ने छै।'

राजिनदर रौह लाए लेलक आ गरचुन्नी गुलो कए दिआ देलकै। आइ राजिनदर भोरे-भोर दारू पी लेलक आ अखैन मस्ती मे रहय। ऊ कोटा करइए। सब ओकरा डीलर कहै छै। खाइ-पीअइ के बड़ सौखीन। दुइए चारि दिन पर माछ-मौंस चाही, ताड़ी-दारू चाही। ऊ सिकरेटो पीअइ-ए, पानो खाइ-ए। चाहक तऽ कोनो बाते नै। अपने समदाही चाहक दोकान करै छै। सब ओकरा इनरा गानही कहै छै। ओकर ई नाम केना पड़ि गेलै, ककरो बूझल नै छै। ऊ एकटा झमटगर पीपर तर मे दोकान करइ-ए। कोसी चौक पर सब सए पहिने वएह दोकान खोलइ-ए। गरमी मे चारि बजे आ जाड़ मे पाँच बजे भोर। दोकान जहिना खुलल, मोहन यादव तहिना हाजिर। मोहन जा जा चाह पीलक ता दू-तीनटा गंजेड़ी पहुँच गेल। मोहन गांजा देलक। कोय लटेलक, कोय गुल तैयार केलक। मोहन पुनरवास मे रहइए आ मालजालक पैकारी करइ-ए।

तकर बाद राजिनदर मिसतिरी आबै छै। ऊ कल गाड़इ-ए। ओकरो संगे दू टा लगुआ रहै छै। तकर बाद देबो यादव आबइए। चाह, गांजा आ गप्पक गुलछर्रा छुटैत रहै छै। इनरा गानही के दोकान गंजेड़ी सबहक अड्डा छिऐ। सिपौल, पुरनबास, परसा, अमठो-एते दूरक जतेक गंजेड़ी छै सब जुटै छै। अइ इलाका के जतेक रिक्शावला, ठेलावला छै, सब ओकरे दोकान मे चाह पीअइ छै।

इनरा गानही कए चारि गो बेटा छै। जेठका डोमा किराना के दोकान करै छै। दोकान पर एकटा ने एकटा गहिकी ठाढ़े रहै छै। एक दिन गुलो रिनियाँ



कए चाह के पुड़िया आनय कहलकै। बिना पैसा के ऊ ककरो लग नै जाय चाहइ-ए। गुलो बहुत कहलकै तऽ मन मारि कए गेल। लेकिन डोमा उधार नै देलकै। रिनियाँ घूरि आयल। गुलो कए तामस उठलै। देखहक! तेरह टका के सौदा नै देलकै! गुलो हनहनायल गेल आ डोमा कए झाड़लक—'आँय रौ! कहियो पेचेबो केलियौ-ए? हम बैमान भाए गेलिऐ रे?'

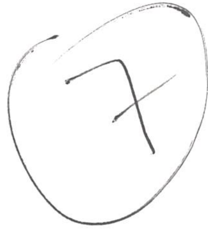
डोमा कए डर रहै गुलो पैसा ने लटका दइ। पुड़िया दैत कहलकै—'हे लएह। मगर साँझ धरि दाए दिहक।'

इनरा गानही के दोसर बेटा सुरेश पानक दोकान करइ-ए। ओकरो दोकान खूब चलइ छै। ऊ सब तरहक चार्जर राखने-ए आ एकटा मोबाइल चार्ज करइ के पाँच टका लै छै। पुरनबास मे बहुत कए बिजली नै छै। ऊ सब सुरेशे लग मोबाइल चार्ज करबइ-ए। सांय-बेटा दिल्ली-पनिजाब खटै छै। मोबाइले सए सुख-दुखक गप होइ छै।

तेसरा बेटा अमर मोबाइल रिचार्ज करइ-ए। फिलिम आ गाना डाउनलोड करइ-ए। फोटो एसटेट करइ-ए। फोटो खींचइ-ए। ओकरो दोकान मे बहुत भीड़ रहै छै।

चारिम बेटा बरजेश दवाइ के दोकान करइ-ए। एकटा लैपटॉप छै। इंटरनेट कनेक्शन छै। नेट पर सरफिंग करैत-करैत ओकरा बहुत रास बेमारी आ इलाजक जानकारी भाए गेल छै। ऊ छोट-मोट डाकटरे भाए गेल-ए। ओकर कहब छै—'कोनो डाक्टर आ हमरा मे फरक एतबे छै जे डाकटर कए डिगरी छै आ हमरा डिगरी नै छै।'

गाम-देहातक बहुत रोगी ओकरा लग आबै छै। डाकटरे जकाँ ऊहो दू-चारि टा जंत्र राखइ-ए। फीस पचास टाका राखने-ए। ओकर देल दवाइ लागि करै छै। दुख छूटि जाइ छै। गुलोओ कएक बेर ओकरा सए दवाइ लेने-ए। गुलो कहइ-ए ओकर दवाइ महग होइ छै।



कंदाहावली कए नव रोजगार भेटलइ-ए। मलहदक चाँप मे मखानक कमौनी। नौ बजे सए तीन बजे धरि भरि ठेंगहुन पानि मे ढूकि कए मखान महक भाकन, करमी, डोका आ घोंघा बीछ कए बाहर करय पड़इ छै। एक सय टाका रोज भेटै छै। कंदाहावली भोरे भानस करइ-ए। कुइछ खाय कए कमौनी करय चलि जाइ-ए। घूमि कए एला पर नहाइ-ए। सौंसे देह करू तेल लगबइ-ए। करू तेल नोचनी मारै छै। अदहा घंटा पएर मोड़इ-ए। फेर आरा चलि जाइ-ए। खेत मे कतौ-कतौ तोड़ी के छिट्टा देल छै, से बीछइ-ए। चिकना पाँच-सात दिन मे उखाड़इ वला भाए जेतै।

रिनियाँ मनसुआयल-ए। आइ डोका के मौंस खायत। कंदाहावाली कहि कए गेल छै डोका लेने एतै। लेकिन डोका नै भेलै। ऊ घोंघा लेने एलै। घोंघा छोट होइ छै। बनबै मे भारी झंझट। आ खाइयो मे बेकार। घोंघा देख कए रिनियाँक मन खसि पड़लइ। ऊ रूसि रहल। ने घोंघा बनबै लए तैयार ने कोनो टहल करै लए तैयार। माय-बबा कतबौ कहै छै—'पानि ला। झाड़ू लगा दही।' कोनो परवाह नै। ऊ गुमसुम बैठल-ए। माय परचारै छै—'जीभलाहि केहन! सब दिन माछे-मौंस चाही।'

रिनियाँ कठुआयल बैठल रहइ-ए। सुक्खल कैल केश हवा मे उड़िया रहल छै। ऊ कहियो केश मे तेल नै लगबइ-ए। तेल रहिते ने छै जे लगायत।

सुखबा अपना माय कए घर सए निकालि देलकै। ऊ सड़क पर पड़ल कहरैत रहै। बुढ़िया अस्सी सालक हेतै। चैल-फिर नै होइ छै। कुइछ दिन पहिने बिरिंचक ठोकर लगला सए खैस पड़ल रहै। जाँघ मे चोट लागलै। तहिया सए जाँघ दुखाइ छै। अनवर देखलकै तऽ बुढ़िया कए रिक्शा पर लादि कए



लाए आनलकै। दोकानक कात मे पाड़ि देलकै। एक कात अनवरक दोकान दोसर कात गुलोक दोकान। बीच मे बुढ़िया। बुढ़िया कए दू गो भोटिया, एगो बाटी, एगो गिलास, एगो बियनि आ एगो लाठी छै। अनवर दू गो लिट्टी लाबि कए बुढ़िया कए देलकै। चाह पिएलकै। फेर बरजेश कए बजेलकै। बरजेश तीन सौ के दवाइ सुइया देलकै। अनवर कए बूझल रहै बुढ़िया लग टका छै। बुढ़िया सए टका लाए कए बरजेश कए देलकै। सब कए बूझल छै बरजेश ककरो उधार नै दै छै। बुढ़िया पाइ बचा कए राखने-ए। दू सौ टके महीना बिरधा पिनसिल भेटै छै। अनवर बुढ़िया कए सुइया देलकै, दवाइ खिएलकै।

गुलोक घरनी बेलावाली सब कए कहने घुरइ—'अइठिन बुढ़िया केना रहतै? के की करतै? भरि राति मच्छर भोमहैर लेतै।'

अनवर कए तामस उठलै—'तू कुच्छो नै करिहक। एक गिलास पाइनो नै दिहक।'

बेलावाली चुप भाए गेल।

लालो चाह पीअ दोकान पर एलै तऽ गुलो कहलकै—'देखहक लालो भाय। अइ बुढ़िया कए पाँच गो बेटा छै। पाँचो नीक कमबै छै। ई सामने मे जे दोकान देखै छहक से एकर पोता उमेशबा के छिऐ। आ अइ बुढ़िया के दशा देखहक। एकर घरवला जखैन मरैत रहै तऽ हमरा कहलकै 'गुलबा, देख लिहैं, ई मौगी सड़क पर बौआ कए मरतै। एकर मुँहे तेहन छै जे एकरा ककरो सए नै पटतै। ई बौआ-ढहना कए मरत। ऊ दिन आ अझुका दिन देखै छिऐ तऽ बुझाइ छै बुढ़बा ठीके कहने रहै।'

बुढ़िया कहरैत रहै आ 'हौ बाप! हौ बाप! हौ बाबू सब! हौ बाबू सब!' जपैत रहै। राति मे बुढ़िया कए कोय खाय लए नै देलकै। बीयनि सए मच्छर हौंकैत आ काहि काटैत भोर भेलै। एक तऽ गुलो कए अपने टांट, दोसर ई डर जे बुढ़िया दोकाने लग हगि-मूति कए घिनाय देतै। लेकिन भुखले पेट मे की होइतइ।

बोहनी भाए गेलै तऽ इनरा गानही चाह आ बिसकुट पठा देलकै। चाह पीयल भाए गेलै तऽ बुढ़िया बीड़ी निकाललक। गुलो कए देलकै। गुलो चुल्ही मे बीड़ी धरेलकै आ बुढ़िया कए पकड़ा देलक। बुढ़िया बीड़ी पीऐत रहल। एक-दू बेर खोंखी भेलै।

बुढ़िया इनरा गानही के पितिया साउस हेतै। ओकरा लाज होइ छै लोग की कहत। ऊ दू गो लिट्टियो पठा देलकै। बुढ़िया लिट्टी खेलक आ सामने दोकान करैत पोता आ पोतपुतौह दिस टकटक ताकैत रहल। ऊ सब कखनू काल कनखिया कए ताकि लइ। दुपहर मे उमेशबा खाइक लाए कए एलै। बुढ़िया दू दिन पर भात-दालि खेलक।

राति मे बुढ़िया आस-पेरा ताकैत रहल। कोय नै पुछलकै। उपासले रहि गेल। भोर मे इनरा गानही फेर चाह भेज देलकै। दुपहर मे अनवर दोकान पर आयल तऽ देखलक बुढ़िया हपकुनियाँ काटने-ए। अनवर बूझि गेलै बुढ़िया भुखले छै। ऊ बुढ़िया कए नहबेलकै। टाट देने अंगना मे पानि ने चैल जाइ, तइ डरे बेलावाली चिकरय लागल।

अनवरो लोग कए देखबय लागलै—'देखहक तऽ। कोन गूंह-मूत बहि कए एकरा अंगना गेलै। हम पूछै छिऐ जे बुढ़िया खेलकै की जे गंदा करतै? दू डोल पानि ढारि देलिऐ तऽ एकरा होइ छै अंगना दहा देलक। एक गिलास पानि तऽ कोय देबे ने करै छै। कोय दू डोल पानियो ढारि देलक तऽ घिन होइ छै।'

गुलो भनभनायल—'बुढ़िया कोनटा लग घिना देलकै। गन्ह टुटै छै।'

अनवर बुढ़िया लए दू टा लिट्टी मंगबा देलकै। ओकरा रिक्शा पर चढ़ा कए कमिटी सेंटर पर भेज देलकै।

अगिला दिन इनरा गानही सुखबा लग गेल। कहलकै—'आब माय कतेक दिन जीयत जे ओकरा भीख मांगै लए छोड़ि देलिऐ? लोग हँसी उड़बइए। दुर छी, दुर छी करइ-ए। कनियो टा लाज-इज्जत-ए तऽ घर लाए जाइयौ। नै देबै खाइ लए, नै करबै गूंह-मूत। अंगना मे मरइयो टा दियौ।'

सुखबा माय कए घर लाए आनलक।



गुलो कएक दिन सए हर भजियाबइ-ए। हरवला आइ-काल्हि काए रहल छै। चास, समार आ चौकी दइ के अढ़ाइ सय मांगै छै। गुलो दू सय कहलकै। एक सय के मूंगक बीया कीन कए राखने-ए। छोटुआ कए अइ हफ्ता पाँचे सय भेटलै। एक सय के ऊ खा-पी गेल रहय। गुलो कए कुइछ नै फुराइ छै। पान सौ मे तीन सौ तऽ हरे-बीहनि मे चलि जेतै। बचि जेतै दू सय। अइ सए एक हफ्ता केना कटतै!

जरना के बड़ घांट भाए गेल छै। गुलो टका दुआरे पलाइ आनय नै जाइ-ए। पुतौह मखान के कमौनी करय जाइ छै तऽ घुरैत काल एक बोझ करमी के लत्ती लेने आबै छै। अखैन ऊ सूखल नै छै। बेलावाली बैठल-बैठल दबिया सए ओकर टोन करइ-ए। सुजीतो दादी सए दबिया छीन कए टोन करय लागइ-ए। गुलो कहै छै—'ई छौड़ा हमरे जकाँ काम करै मे बीहड़ हेतै।'

गुलो दबिया लाए कए आरा चलि जाइ-ए। चह के कुइछ ठाढ़ि सूखि गेल छै। गुलो गाछ पर चढ़ि गेल आ ठाढ़ि पांगय लागल। उतरैत काल तरबा मे चह के खुट्टी गड़ि गेलै। गुलो ससरि कए गाछ पर सए उतरल। तरबा सए खून फेक देने रहै। कसि कए तरबा कए दाबने रहल। कने कालक बाद उठल। जरना समेटलक आ घर चलि आयल। आइ पहिल बेर ओकरा बुझेलै जे गाछ पर चढ़ैवला उमेर आब नै रहलै। आब कहियो गाछ पर नै चढ़त। ओकर देह-हाथ टुटैत रहै। बिन नहेने खेलक आ सूति रहल। बेरूपहर चारि बजे रिनियाँ आ कंदाहावाली मूंग बाउग करय गेल।

कंदाहावाली सए गुलो कहियो पाइ नै मांगै छै। चाउर, गहूम आ मटिया तेल कोटा सए आनि कए दाए दै छै। छोटुआ वला पैसो सए जतेक जे होइ छै, से करैत रहै छै। छोटुआ वला कतेक पैसा कोन चीज मे गेलै से सब कए

बूझल रहै छै। मगर कंदाहावाली के पैसा के थाह नै लागै छै। ऊ हटिए हटिया सस्ता मे तरकारी कीनइ-ए। पछिला हटिया सुजीत लए दू गो पेंट आ दू गो गंजी कीनलक। काल्हि सए गहूम काटय जायत। रिनियो जेतै। बान्ह के भीतर लालगंज। डेढ़ कोस हेतै। रिनियाँ कए बड़ उत्साह छै। आब ओहो कमायत।

दुनू ननदि-भौजाइ एकदम भोरे चाह पी कए चलि दइ-ए। संग मे एक बोतल पानि छै। कोसी चौक के दस-बारह टा और जनीजाति गहूम काटय जा रहल-ए।

आठ बजे धरि कटनी मे खूब मन लागै छै। कटनी उसरबो करै छै। तकर बाद रौद तीख भेल जाइ छै। घाम छूटय लागै छै। पियास लागय लागै छै। गहूम खराय जाइ छै। घमायल देह मे चाँछ लागै छै। गहूमक सूंग बाँहि पर ललका डिरीर पारने निकलि जाइ छै। नोचनी बरै छै। दस बजे कटनी बंद होइ छै। सब घर चलि आबइ-ए।

कंदाहावाली आ रिनियाँ मिलि कए भानस करइ-ए। नहाइ-ए, खाइ-ए। कनी काल लोटपोट करइए। फेर कचिया लाए के निकलि जाइ-ए। बेरूपहर जाइत काल मुँहे पर रौद लागै छै। गोसांइ डुमानी धरि कटनी चलै छै। जन सब काटल गहूम खेत मे पाँतले छोड़ि कए चलि आबइ-ए। दू-तीन दिनक बाद बोझ बान्हत। दसटा मे नौ टा बोझ गिरहतक खरिहान मे पहुँचाबय पड़तै। एक बोझ अपन बोनि हेतै।

बाध मे आइसकिरीम आ दालमोट वला फेरी लगबैत रहै छै। रिनियाँ गुलो सँ पाँच गो टाका माँगइ-ए—'बबा, पाँच गो टका दएह। आइसकिरीम खेबै।'

'नै छै टका।'—गुलो टिरसि कए कहइ-ए।

'दएह ने हौ।'—रिनियाँ खोसामद करै छै।

'नै देबहक?'—रिनियाँ निराश भेल जाइ-ए।

गुलो कए तामस उठलै—'हे गे छौड़ी, देखबिही! बड़ आइसकिरीम वाली भेलीहे। आइसकिरीम खेतीह! तेहन मारि मारबौ जे सब आइसकिरीम घुसड़ि जेतौ।'

रिनियाँ उदास भाए गेल। ओकर मौलायल मुँह देख कए गुलो कए ममता लागलै। ओकरा लग दुइए गो टका रहै, दाए देलकै। रिनियाँक चेहरा पर मुस्की एलै।



जन सब बोनिवला बोझ भरिगर कए बान्हइ-ए। डब्बल बोझ। गिरहतो कुइछ नै कहै छै। आइ-काल्हि जन नै भेटै छै। गिरहत खोसामद करैत रहै छै—हमरा मे काटह तऽ हमरा मे काटह। जँ कुइछ कहलकै तऽ गहूम खेते मे रहि जेतै।

बोनि वला छह टा बोझ भाए गेलै तऽ गुलो रिक्शा मंगनी केलक आ बान्ह पर गेल। बान्हक पच्छिम रिक्शा नै जाइ छै। कंदाहावाली आ रिनियाँ बोझ ऊघि कए आनलक। बान्हक भीतर कतौ-कतौ बाउले-बाउल छै। बाउल पर बोझ लाए कए चलल नै जाइ छै। पएरे ने उठय दइ छै। ऊ दुनू कहुना पछड़ैत-पुछड़ैत ऊघि तऽ लेलक, लेकिन थाकि कए चूर भाए गेल। सब मिलि बोझ कए रिक्शा पर चढ़ेलक, डोरी सए कसि कए बान्हलक आ गड़केने घर आयल। ओइ दिन सब भुखले सूति रहल। ततेक थाकल रहय जे भानस नै काए भेलै।

एक दिन कटनी काए कए घुरैत-घुरैत राति के आठ बाजि गेलै। गुलो बजार गेल रहै। रिनियाँ कए बड़ जोर भूख लागि गेलै। बबा रहितिऐ तऽ एक-दू टका माँगि कए कुइछ खाय लइत। गुलो आ उमेशबा के दोकान आमने-सामने छै। रिनियाँ देखलक उमेशबा के बेटी दोकान पर असकरे छै। लग गेल आ कहलकै—'हे गे! कने पकौड़ी दे ने। बड़ भूख लागल-ए।'

छौड़ी पकौड़ी दाए देलकै। ई बात कोय उमेशबा कए कहि देलकै। उमेशबा अगिया बैताल भेल आयल। बेटी कए दू चाट देलकै आ रिनियाँ के फज्झति करय लागलै। माय आ भौजाइ सेहो लूलू-थूथू केलकै। रिनियाँ बड़ पछतायल। अपमान आ दुखक अनुभव करैत बिछौन पर पड़ि रहल। निन्न आबि गेलै।

गुलो घुरल तऽ देखलक सब बिछौन धेने छै। भानस नै भेल रहै। घर मे सिदहा नै रहै। कंदाहावाली कहलकै दोकानदार के चारि सौ रुपैया उधार भाए गेल छै। और उधार नै देलकै। गुलो दोकान गेल। दोकानदार कए कहलकै—'छोटुआ कए हफ्ता भेटतै तऽ सब चुकता काए देबौ।' बनियाँ थोड़े आँटा आ अल्हू देलकै।

रोटी-तरकारी बनलै। सब खेलक। लेकिन रिनियाँ नै खेलकै। दिनो मे ऊ एक्के टुक्का खेने रहइ। रोटी महकि गेल रहै। बसियहा रहै। रौद मे खटैत-खटैत रिनियाँक आँखि धसि गेल छै। मुँह मलिन भाए गेलइ-ए। चेहरा परक पानि उड़ि गेल छै।

बोनि वला गहूम कए गुलो थलेसर पर तैयार करबेलक। तीन मन भेलै। छह सय रुपया के भुस्सी बेचलक। गहूम खाय लए राखि लेलक। भुस्सी वला टका कंदाहावाली कए दाए देलकै। कटनी खतम भाए गेलै। बैठारी भाए गेल छै। कंदाहावाली अबेर धरि सूतल रहइ-ए। बेटा सुजीत रोज अनवर सए पैसा मांगै छै—'हौ, टका दएह।' आ अनवर एक टका के सिक्का निकालि कए दै छै। सुजीत टेबा पकड़ि लेने-ए। ककरो सए सिंघाड़ा मांगि लेलक; ककरो सय टॉफी तऽ ककरो सए कुइछ।

कल ठीक नै भेल छै। अनकर कल सए पानि आनै खातिर रिनियाँ आ कंदाहावाली मे झगड़ा होइत रहै छै। दोकानक टाट धँसि गेल छै। दोकान मे गहिकी बैठल तऽ ऊपर देने अंगना देखार दै छै। गुलो कए बड़ खराप लागै छै। सोचइ-ए टिन के टाट लगा लेत। तेल वला टिन बीसे टका मे दै छै। तीन सौ मे टिनक टाट भाए जेतै। सब सए सस्ता इएह हेतै। अपने सए ठोकि लेत। कल ठीक करेनाइ ओकरा बश के बात नै छै। अरजुनमा पैसा भेजतै तबे हेतै। लेकिन ऊ भेजते नै छै।

गुलो कए नरेशबा कहलकइ-ए रंजीता रंजन सए एक हजार दिआ देबह। नरेशबा कंगरेसिया भाए गेल-ए। एमपी के एलेकशन छिऐ। कांगरेस रंजीता रंजन कए ठाढ केने-ए। गुलोक परिवार मे छहटा भोट छै। ई बात नरेशबा कए बूझल छै। कहलकइ-ए मंगल दिन एक हजार दाए देतै।

गुलो इंतजार करय लागल। दू-तीन दिन नरेशबा देखेलइ। रिक्शा पर रंजीता के परचार करैत रहय। फेर पता नै कोने चलि गेलै।

एक दिन फुलबा एलै। कहलकै—'गुलो भाय, आइ साँझ मे हरेरामक दुआर पर मीटिंग छिऐ। चलि आबिहह। अइ बेर मोदी कए जितेनाइ छै।'

गुलो उकटि देलकै—'मीटिंग-फीटिंग सए हमरा की? तोरा मोटका गड्डी भेटल हेतौ। तू कर गे।'

एक दिन कौमनिस्ट वला बजेलकै। गुलो टारि देलक।

गुलो अनवर कए पुछलकै—'भाय, भोट ककरा दिऐ?'

अनवर कनी काल चुप रहल। बाजइ सए पहिने अगल-बगल देखलक। कहलकै—'देखहक, सब पाटी एके रंग छै। तब रंजीता रंजन



लोगक सेवा केने छै। बाढ़ि मे नाह पर जा कए धोती-साड़ी बाँटने छै। जाड़ मे कम्मल बाँटलकै। गरीब कए देखइवला वएह टा छै। ओकरे दहक।'

कंदाहावाली कठौते-कठौत माटि ऊघि रहल छै। चूल्ही पारतै। साँझ पड़ि गेलै। रिनियाँ झाड़ू दाए रहल छै। रिनियाँ आ कंदाहावाली मे रोज खटपट होइ छइ। छोट-छोट बात खातिर। पानि तऽ कएक दिन सए गुलोए आनइ-ए। तइयो दुनू मे बाताबाती भाए जाइ छै। गुलो अइ सब सए अकच्छ भाए गेल-ए। सोचइ-ए रिनियाँ कए जेठकी बेटी रुनियाँ लग पठा दिअइ। ने एतए रहतै, ने टंटा हेतै। पुतौह कए केना कहतै तू नहिरा चलि जा। बेटिए कए हटबय पड़तै।

सुजीत पकौड़ी मांगि रहल छै। गुलो ओकरा लाए कए ठकना दोकान पर गेल। पकौड़ी दिआ देलकै। सुजीत खाय लागल। दोसर पकौड़ी जहिना चिबेलकै कि चिचिया उठल। मरचाइ भकभका कए लागलै। गुलो ओकरा पानि पिएलकै आ माय लग अंगना पठा देलकै। कंदाहावाली पितायल रहय। रिनियाँ सए कहाकही भेल रहै। सुजीत कानैत-कानैत गेल आ माय के साड़ी मे लटकि गेल। माय सबटा तामस ओकरे पर निकाललक। छौड़ा कए ओदबाद काए देलकै।

साउस कहलकै—'मिरगी उठि गेल छह हे!'

'हँ, मिरगी उठि गेलइ-ए। हमर बेटा छिऐ, हम मारबै।'—कंदाहावाली सुजीत कए और तीन-चारि लात देलक। छौड़ा ओंघड़ा गेल।

रिनियाँ बाजल—'ई मौगी पगलाय गेलइ-ए।'

'हे, बेसी चरचर नै करू। मुँह बंद राखू।'—कंदाहावाली डपटलकै।

'बोलबै तऽ तू की काए लेबहक? बड़ बेटा वाली भेली-ए। खाली जनमा देलक तऽ बेटा वाली बनि गेल। दिन-दिन भरि तूही राखै छहक? गूँह-मूत आ नेटा-पोटा तूही करै छहक?'—रिनियो चुप रहै वाली नै।

'बेसी लबलब नै करू, ने तऽ जी खैंच लेब।'

'खिंचही तऽ!'—कहैत रिनियाँ सरसरायल भौजी लग पहुँच गेल। कंदाहावाली सराक चाट खींच लेलकै। रिनियाँ दाँत काटय चाहलक। कंदाहावाली एक हाथ सए ओकर झोंटा पकड़लक आ दोसर हाथ सए धकेल देलकै। रिनियाँ धड़ाम सिन ओसरा सए नीचा खसल।

बेलावाली टुकुर-टुकुर देखैत रहय आ बाजय—'गे माय गे माय! देखहक हौ लोग सब!'

अंगना मे पड़ल रिनियाँ कानय लागल। छोटुआ कए नेस देलकै।
बाजल—'मार तऽ अइ मौगी कए।'
'मारि कए देखही ने!'
छोटुआ चप्पल खोललक आ जुमा कए कंदाहावाली दिस फेकलक। चप्पल लागि गेलै। कंदाहावाली दौड़ल आ छोटुआ कए ओही चप्पल सए दिअय लागल।
गुलो पहुँचल तऽ देखलक अंगना मे महाभारत मचल छै। ऊ छोटुआ आ रिनियाँ दुनू कए पकड़ि कए दोकान पर लाए आनलक। सुजीत कए दादी सम्हारने रहै। कंदाहावाली डोरी ताकलक। ससरफानी बनेलक आ गरदनि मे फँसा लेलक।
बेलालाली चिचिआयल—'हौ बाप! ई मौगी फाँसी लगा लेतै।'
गुलो दौड़ल। अंगना पहुँचल तऽ देखलक कंदाहावाली केबाड़ लगबैत रहै। ऊ फानि कए ओसरा पर चढ़ल आ केबाड़ ठेल देलकै। पुतौह कए डेन पकड़ि कए बाहर केलक। बाजल—'फँसरिए लगेनाइ छह तऽ चलि जा, नहिरा मे लगाबिहह। नै तऽ घरवला कए फोन करहक। अपने लग राखतह। हमरा और कए आगि नै उठाबह। जते हम करै छिअह, तते कोनो ससुर कोनो पुतौह के नै करैत हेतइ। की नै करै छिअह? झाड़ू दैते छिअह, बरतन माँजिए दइ छिअह, हपसि-हपसि कए पानि लाबिए दइ छिअह। आब की करिअह?'—बाजैत-बाजैत गुलो के दम फूलि गेलै। दोकान पर चलि आयल।
ने कोय खेलकै, ने पिलकै। साँझ पड़िते सब बिछौन धाए लेलकै। लेकिन गुलो के निन्न नै भेलै। बेलावालियो जागले रहल। ओकरा होइ सब भुखले सूति गेल। एते टा के राति केना कटतै!
सगरे निसबद भाए गेलै। बेला वाली उठल। जरना लाबि कए चूल्ही लग राखलक। जग लेलक आ ठकना कल सए पानि आनलक। आंटा सानल भाए गेलै तऽ कंदाहावाली कए उठबय लागल—'कनियाँ, उठह। रोटी पका दहक। सब भुखले छइ। आंटा सानि कए राखि देने छिअह। जरनो चुल्हिए लग छह। उठह-उठह। अखैनियो राति बहुत छै। हाय-हाय! सब ओहिना छै। पका दहक।'
कंदाहावाली जागले रहय। भूख सए ओकरो निन्न नै होइत रहै। उठल, रोटी पकेलक आ जा कए बिछौन पर पड़ि रहल।

बेला वाली नून-मरचाइ के साना बनेलक आ सब कए उठबय लागल। बुढ़बा एकेटा रोटी खेलकै। छौड़ो-छौड़ी कए छुच्छे रोटी नै खायल गेलै। बहुत कहलकै तऽ कंदहोवाली खेलकै। बुढ़ियो कनीटा खेलक। सुजीत नै उठलै।
अगिला दिन कंदाहावाली अरजुन कए फोन लगेलक। कहलकै—
'तोहर भाय-बहीन, माय-बाप सब मिलि कए हमरा मारलक-ए।'
अरजुनमा पुछलकै—'मारलकौ किए? कुइछ केने हेबही तबे ने मारलकौ?'
'हँ, रिनियाँ पर बाजल रहिऐ।'
'की चाहै छिही?'
'हमरा पाँच हजार टका भेज दएह। नहिरा चलि जाएब।'
'ठीक छै, राख।'
काजक बेर रहै। अरजुन सनछेपे मे गप केलक।
तेसर दिन कंदाहावालीक भाय टका लाए कए पहुँच गेलै।
सब सए पहिने कंदाहावाली किराना दोकान के करजा उतारलक। सतलरेना के आठ सय टका भाए गेल रहै। एगारह सय अरजुनमा वला करजा सधेलक। बजार गेल। चदरा वला डराम आठ सौ मे कीनलक। बोनि वला तीन मन गहूम डराम मे ढारलक। ऊपर-नीचा दुनू मुँह मे ताला ठोकलक। आ नहिरा चलि गेल। सहरसा मे नुआँ-बस्तर कीनत। सर-सनेस लेत।
जाइत काल गुलो कहलकै—'कनियाँ! ई तऽ नै सोचलहक जे चलि जेबै तऽ बुढ़बा-बुढ़िया केना खेपतै? ठीक छै। नै रहबह तऽ जाह। कोनो बात नै। हमरो अउर के गुजर जेबे करतै। भगमान पार लगेतइ। लेकिन नहिरा जा कए ई अकलंक नै लगाबिहह जे बुढ़बा-बुढ़िया मारलक-ए। जँ झुठे आगि उठेबह तऽ सुनि लएह। हम दुनू जब मरि जाइ तबे एतए पएर दिहह। हमर जित्ता जिनगी मे आबइ के काज नै!'
गुलो कए भेलै जेना ऊ कानय लागत।
कंदाहावाली आ सुजीत के चलि गेला सए घर-अंगना सून लागय लागलै।
बेलावाली एक सूप गहूम चोरा कए राखि लेने रहय। घर मे एक्को टा दाना नै रहै। धीयापुता कए की खाय लए दैतिऐ। तैं नुका कए राखि लेने रहय। मौगी एहन निसोख जे रिनियोक बोनि धाय राखलकै। भुस्सी वला छबो सय टका लाए कए चलि गेलै। बेलावाली वएह गहूम फटकइ-ए। आइ पिसाय लेत।

गुलो कए फेर सए चिंता धाय लेलकइ-ए। दू टा घर भासि गेल छै। खुट्टा सब सड़ि गेल छै। पाढ़ि टूटि गेलइ-ए। दोकानक टाट कहिया सए ने टूटल छै। एकदम निफाह भाए गेल छै। कल ततेक दिन सए खराब छै जे ओतुक्का माटि सूखि कए हटहट करै छै।

गुलोक पछुआर मे दू टा कदम के गाछ छै। अनवर कहै छै—'गुलो, एकटा गाछ बेच लएह। चारि-पाँच हजार मे बिकिए जेतह। ओही सए घर आ कल दुनू ठीक कराय लिहह।'

गुलो कहै छै—'अनवर भाय, ई दुनू गाछ रिनियाँक बियाह लए राखने छिऐ।'

अनवर अबाक भाए जाइ-ए।

गुलो भोर-साँझ आरा पर जाए लागल-ए। घसबाहनी सब बड़ उपरदह करै छै। नै जेतै तऽ एकोटा मूंग नै हुअय देतै। आरा परहक गाछ मे कतौ-कतौ टिकला बचल छै। बिहाड़ि मे सबटा गिर गेलै। ओगरबाहि तऽ करइए पड़तै। नै करत तऽ जेहो छै, सेहो तोड़ि कए लाए जेतै।

आरा पर तीन कोठी बाँस छै। गुलो गिरहत कए कहलकै—'मालिक, घर टूटि गेलइए। दू-तीन टा बाँस दैतिऐ तऽ खुट्टा लगा लैतिऐ।'

'जो काटि ले।'—गिरहत दहिन रहै।

गुलो आब दुपहरो मे आरा जाय लागल। तीनटा बाँस काटि लेलक। ओकरा छील-मोठि कए खुट्टा काटलक आ फजिलाहा के बत्ती चिरलक। अखैन और बाँस काटत। मालिक देखै लए थोड़बे एतै! हँ भरि देलकै तऽ भाए गेलै। बेसिए काटि लेत।

दोसर दिन दबियाक नोकी सए गुलो एकटा हड़ौथ काटलक। खूब जुआयल आ मोट। बाँस तेहन झोंझि मे रहै जे दबिया चलबै मे ओजिएबे ने



करै। नोकी सए काटला पर बाँस फाटि-फाटि गेलै आ छीप तीन हाथ झुकलै। जड़ि घींचैत-घींचैत गुलो अपस्याँत भाए गेल। झोंझि मे सए बाँस नै निकललै। तखैनिए बिहाड़ि उठि गेलै। गुलो घर आबि गेल। बिहाड़ि कड़गर रहै। भनसा घरक सबटा खढ़ उछाहि देलकै। आब रौद आ पानि-बुनी मे केना भनसा हेतै!

बिहाड़ि छुटलै तऽ छोटुआ एक पन्नी टिकला लाए कए एलै। गुलो कए तरबाक लहर मगज पर चढ़ि गेलइ—'रे सार! काम छोड़ि कए टिकला बिछने घुरै छिही!'

'बिहाड़ि मे सब काम बंद भाए गेलै।'

'आबो बिहाड़ि छेबे करै रे हरामी? जो, जल्दी जो। कहियही झाड़ा फिरय गेल रहिऐ।'

छोटुआ कोनो जवाब नै देलकै। ओतए सए सुहटि गेल। बिजला बेटी के आइ कुमरम छिऐ। छोटुआ ओकरे ओइठिन चलि गेल आ खेलाए लागल। रिनियाँ देख लेलकै। आबि कए बबा कए कहलकै—'छोटुआ खेलै छह। काम पर नै गेलह।'

गुलो कए रंज भेलै। बाजल—'आबए दही। आइ सार कए बान्हि कए मारबै।'

साँझ मे छोटुआ आयल तऽ गुलो धेलक ओकर गट्टा। घींच कए दोकान मे आनलक आ बिचला खुट्टा मे बान्हि देलकै। तकर बाद दे चाट।

छोटुआक मुँह लाल भाए गेलै। गुलो चाट दइ आ पूछै—'बोल, फेर नागा करबिही?'

'आब कहियो काम नै छोड़बै, हौ बाप!'—छोटुआक आँखि सए ठप-ठप लोर चुबैत रहै।

बेलावाली गुलोक डेन पकड़ि कए हटेलकै।

छोटुआ खुट्टा मे बान्हले रहि गेल। ऊ सब जहिना एने-ओने गेल कि छोटुआ दाँत सए डोरी काटलक आ भागि गेल। बड़ी राति धरि बिजला ओइठिन रहल। लेकिन कोय खाए लए नै कहलकै। चुपेचाप घर आयल आ बिछौन पर पड़ि रहल। बेलावाली जागले रहय। उठल आ थारी मे रोटी-

तरकारी परसि कए देलकै। छोटुआ भुखायल रहय। चारिटा रोटी खेलक। अगिला दिन एके दुपहर काम केलक आ बिजला ओइठिन चलि गेल।

गुलो पुछलकै—'काम पर किए नै गेलही?' तऽ बाजल—'बिजला भैया कहलकै मदत काए दे।' गुलो चुप रहि गेल। बियाह-दान समाजक काज छिऐ।

बेलावाली कए होइ छै जे कोय कुछो काए देलकइ-ए। ककरो नजरि लागि गेलइ-ए। कोनो डनियाही मंतर पढ़ि देलकइ-ए। नइ तऽ एते दवाइ खेलिऐ, कहाँ ठीक होइ छिऐ? बुढ़बो खों-खों करिते छै। सब दिन कुइछ ने कुइछ होइते रहै छै। आइ ई तऽ काल्हि ऊ। ऊहो कत्ता दवाइ खेलकै, मगर ठीक नै भेलै। छौड़ियो गलल जाइ छै। कहियो पेट झड़ल; कहियो उल्टी भेल; कखनू चक्कर आयल। छोटुआ के तऽ मतिए छीन लेलकइए। काम पर गेल आ भागि आयल।

एगो बबाजी कहलकै—'घर पर मरछाउर छीट देने छह। तैं एना होइ छह। हम जंतर बना कए देबह। सब ठीक भाए जेतह।'

बेलावाली सब लए जंतर बनबेलक। अपनो पिन्हलक। दस दिन बीत गेलै। बेलावाली गुलो कए कहलक—'जंतर सए कहाँ कोनो फेदा भेलै!'

गुलो भड़कि गेल—'मादरचोद! तोरा कुछो बुझाइ छौ? कोय कुइछ कहि देलक कि दौड़ल ओइ पाछू। ई टाटक-फाटक फालतू छिऐ। अइ सब सए कुच्छो होइवला नै छै।'

बेलावालीक अपन सनक मुँह भाए गेलै। चुप भाए गेल।

कोय बेलावाली कए कहि देलकै—'तोहर घरेक गोसांइ बिगड़ल छह। डाली लगाबहक।'

बेलावालीक घर मे कालीबंदीक सेवा छै। ओइ दिन सए ऊ बेसी जतन सए गोसांइ घर नीपय-पोतय लागल। रोज फूल चढ़बय लागल। धूप दिअ लागल। बिना पूजा-पाठ के पानियो नै पीअय। लेकिन अइ सब सए ओकरा संतोख नै होइ। बेर-बेर सोचय भगैत करा ली। गोसांइ सए फुलहासि कराबी। ऊ भगत कए पकड़लक। बेरागन दिन भगैत शुरू भेलै। पान-फूल आ परसाद चढ़ेलक। भगत गोसांइ के पीरी लग बैठल। भगतिया भगैत शुरू केलक।

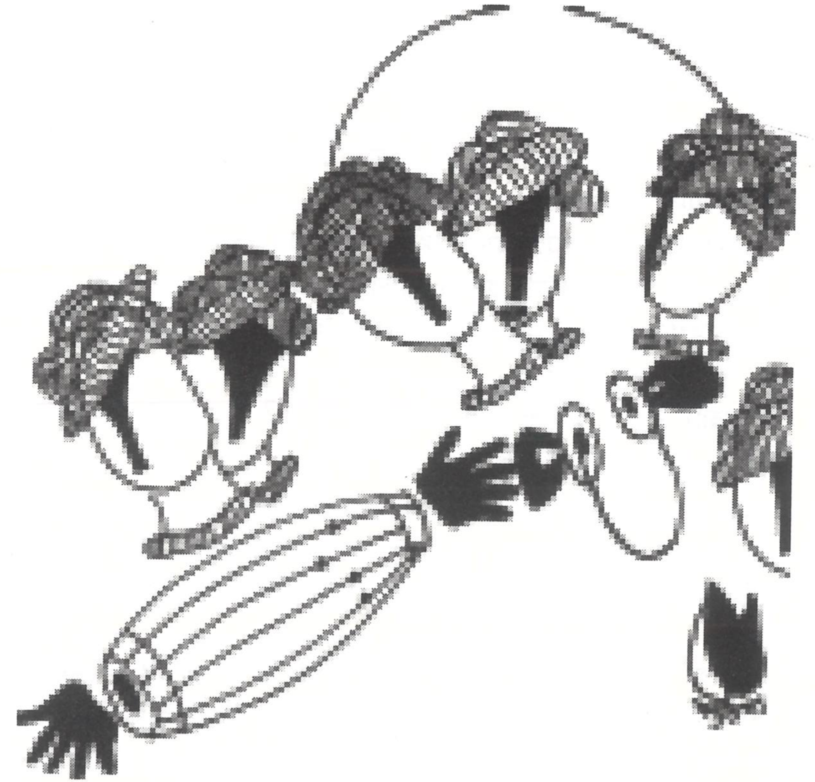


*काली केर अंगना*
*अड़हुल केर गछिया रे*
*फल फूल लुधकल जाए*

भगत पर काली सवार भेलै। भा आबिते भगत झूलय लागल। 'हे-ए-ए! हौ-हौ! आब मन पड़लह-ए?'

'दोहाइ काली मइया के! गलती माफ हो मइया! सेवक पर बड़ बिपति पड़ल छै। बचेबै नै तऽ के सेवा करत?'—'भगतिया जवाब देलकै।'

'हौ-हौ! लएह।'—भगत एकटा फूल उठेलक—'लएइ। जाह। आब कुशक कलेप नै लागतह। सब ठीक भाए जेतह। लएह।' बेलावाली खौंछा पसारि कए फूल लेलक। फूल दाए कए गोसांइ पाट चलि गेलै। बेलावाली आब निचेन भाए गेल।



10

छोटुआ मालिक सए एडभांस मांगलक—'मालिक, बारह सौ टका दिऔ। कल ठीक करेबइ। दू हफ्ता पैसा नै देब। मिनहा काए लेब। कल बिना बड़ दिक्कत होइ छै।'

'दू दिन ठहर। अखैन टांट छै।'—मालिक भरोस देलकै। छोटुआ बड़ खुश भेल। घर गेल आ माय-बबा कए सुनेलकै। आस मे ओकरो दुनूक आँखि चमकलै। लेकिन रिनियाँ कए संदेह भेलै। बाजल—'देतह थोड़बे। अइ छौंड़ा कए ओहिना कुछो कहि देलकै। दशरथबा एक नम्मर के ठक छै।'

'तूही बुझै छिही नै देतै? देखैत रहिहहि ओकर बाप देतै।'—छोटुआ रिनियाँक बात काटलक।

'हफ्ता तऽ दैते ने रहौ। काम करही छह दिन तऽ दैत रहौ चारि दिन के। ऊ तऽ हमहीं फटकारलिऐ, झगड़ा केलिऐ तब देलकौ। बड़ सस्ता छै! हिनका एडभांस दै छै!'—रिनियाँक गप सए छोटुआक मन मे संदेह पैस गेलै—'हँ हौ बबा! नै देतै?'

'देखही ने। दू दिनक नाम कहलकौ-ए ने? दू दिनके बाद फेर मांगिहै।'—गुलो हूबा बढ़ेलकै।

'हे गै! एना मन्हुआयल किए रहै छिही?'—बेलावाली रिनियाँ कए पुछलकै।

रिनियाँ कोनो जवाब नै देलकै। उदास बैठल रहल। ओकर मन ठीक नै छै। सरदी भाए गेलइए। देह जड़कै छै। चारि बजैत हेतै। मस्टरनियां आरा पहुँच गेल हेतै। रिनियाँ जायत। एक छिट्टा घास गैढ़ कए देतै तऽ ऊ दस गो



टका देतै। मन नै करै छै जे जाइ। नै जायत तऽ दस गो टका छूटि जेतै। रिनियाँ छिट्टा-खुरपी लेलक आ आरा चैल गेल। साँझ मे घुरल तऽ बोखार सए देह हुहुआइत रहै।

गुलो अनवर लग गेल। कहलकै—'भाय! छौड़ी के देह सए आगि बरसै छै। छौड़ी कए समांगे ने होइ छै। की करिअइ कुइछ ने फुराइ छै।'

अनवर बोखार उतारइ वला गोली देलकइ। कहलकै—'काल्हि असपताल लाए जाहक। तीने टका लागतह। डाक्टरो देख लेतै आ दवाइयो देतह।'

गुलो सएह केलक।

दशरथ जे टेम लेने रहइ से पूरि गेलइ। एडभांस देतै। छोटुआ आइ सब सए पहिने पहुँचल। मिल मे भरि दिन काम करैत रहल। दिन जहिना लुकझुक करए लागलै, छोटुआ समाद पर समाद पठबय लागल। घरक अगल-बगल के जे कोय पलाइ कीनय जाइ, सब कए कहै—'बबा के कहिहक आबि कए रुपैया लाए जेतै।'

गुलो के मन नै मानै। तइयो गेल। जाए कए दशरथक सामने ठाढ़ भेल। दशरथ हिसाब-झाड़ी करैत रहै। बड़ी काल भाए गेलै। गुलो बाजल—

'मालिक! छोटुआ कए एडभांस दिआ कहने रहिऐ?'

'तू जाह। हम ओकरा दाए देबै।'

गुलो मने मन दशरथबा कए गारि पढ़लक। सार, टारइ-ए। ऊ चैल आयल। मगर छोटुआक बाट ताकैत रहल।

छोटुआ आठ बजे राति मे एलै। एक हजार टाका लाय के। घर मे जेना सनसनी पसरि गेलै। राति मे रिनियाँ सपना देखलक। ऊ अपन कल सए पानि भरि रहल-ए।

लेकिन रुपैया घर मे कलह के जड़ि बनि गेलै। सबहक विचार अलग भाए गेलै। गुलो आ रिनियाँ के विचार रहै जे कल ठीक कराएल जाए। बेलावाली कहै—पहिने घरे ठीक कराए लएह। छोटुआक सख विचित्रे रहै। आब ऊ साइकिल लेत। उमेशबा एकटा पुरान साइकिल बेचैत रहै। दाम राखने रहै एक हजार। छोटुआ कए पता लागि गेलै। ऊ जिद धाए लेलक साइकिल लेत।

रिनियाँ कहलकै—'ऊ साइकिल लेतह तऽ हमहूँ सलवार-फराक आ चप्पल लेबै। हमर पोशाक वला पान सौ टका खाए गेलहक रहय।'

'बेसी लबलब नै कर। ई हम्मर पैसा छिऐ। हम साइकिल लेबै। तोरा जे लेनाइ छौ, कमा कए ले।'—छोटुआ बाजल।

'ईह बड़ कमासुत! पैसा वला भेल-ए। हमर पैसा के चाटलिही रहय किऐ?'

'देखबिही?'

'की देखबै रे?'

'बबा! हम साइकिल लेबै। हमर पैसा के कुछो केलहक तऽ हम काम छोड़ि देबह। कतौ चैल जेबह।'

गुलो आ बेलावाली कतबो बुझेलकै जे साइकिल सए बेसी जरूरी घर छै, कल छै; लेकिन छोटुआ अपन जिद धेने रहल।

एक साल पहिने अरजुनमा पनिजाब सए एगो पुरान साइकिल आनने रहइ। तकरा ऊ डेढ़ सौ मे बेच लेलक। बेच कऽ ठर्रा पी गेल। छोटुआ तहिए सए कहइ—'बबा, हमहूँ एगो साइकिल किनबइ। कीन कए भैया कए देखा देबइ।'

से आइ ऊ साइकिल कीन लेलक। नौ सौ मे देलकै। साइकिल उमेशबा के अप्पन नै रहै। परसा के एगो छौड़ा ओकर दोकान पर छोड़ि कए चैल गेलै। भरिसक पीने रहइ। उमेशबा ओइ साइकिल कए गुलोक अंगना मे राखि देलक। कहलकै कुटुम के छिऐ। साँझ मे साइकिल वला एलइ तऽ उमेशबा कहलकै—'हम नै जाने छिअह। दोकान पर तऽ लोग आबिते-जाइते रहइ छै। कोय लाए गेल हेतह।'

साइकिल वला घूरि गेल।

पनरह दिन भाए गेलै तऽ गुलो उमेशबा सए पुछलक—'हे रे! की बात छिऐ? ककर साइकिल छिऐ?'

उमेशबा सब हाल कहलकइ आ साइकिल लाए गेल। वएह साइकिल छोटुआ कीनलक-ए।

गुलो कहै छै—'गलत पैसा गलतिए जगह पर जाइ छै। देखियौ, आइए ऊ साइकिल बेचलक आ आइए बेटाक हाथ टूटि गेलइ। करनी के फल भेट गेलै।'



गुलो दोकान वला टुटलहा टाट कए उजाड़लक। दोसर बिछेलक। तर मे नवका करची देलकै। पुरना खढ़ के आलन देलक। ऊपर सए पुरनका करची देलकै। बत्ती नव रहइ। करचीक टाट मे बनहन देनाइ कठिन होइ छइ। गुलोक हाथ मे कएक ठाम खोंच लागलै। बनहन दइ लए दू टा बत्ती बचले रहइ कि डोरी सठि गेलै। टाट बिछायले छोड़ि देलक। डोरी कीनइ लए पैसा नै छै। राति मे सोचलक साड़ी के पाढ़ि सए बनहन दाए देत।

भोरे-भोर रिनियाँ बाहर गेल। घुरैत काल देखलक एगो नया मकानक बाहर सुतरी फेकल छै। बाँस के कुइछ जैराठो रहइ। रिनियाँ सब उठेने चैल आयल। गुलो कए छगुन्ता भेलै। सएह देखहक! भगवान केना सुनि लेलकै। कोनो डोरी दू हाथ तऽ कोनो पाँच हाथ के रहइ। गुलो बनहन दइ मे भीर गेल। दू गोड़े कए पकड़ि कए टाटो लगा लेलक। कुइछ डोरी बैचिए गेलै।

गुलो कए दू गो सुपारी नोत मे आयल छै। एकटा तऽ बगले मे लालो पंडित के पोती के बियाह छिऐ। दोसर दू कोस दूर छै। सारि के जैधी के बियाह छिऐ। दुनू मे एक्कोटा छोड़ै वला नै। गुलो की करत? कतए सए नोत पूरत?

ऊ रोज दू टका चारि टका बाछय लागल। ओइ पैसा कए नुका कए राखय लागल। जहिया लालो अइठिन बियाह रहइ तहिया धरि तीस गो टका जमा भेलै। आब बीस गो टका केना हेतै? सोचलक अनवर सए मांगि लेत। ओकरा ईहो चिंता रहै जे अनवर नै देतै तब की करत। लेकिन जा रे अनवर! ऊ तऽ मांगिते दाए देलकै।

रिनियाँ आँटा सानैत रहै। अंगने सए हाक देलकै—'बबा! भोजो खाइ लए जेबहक?'

'हँ, गे।'—गुलो टिरसि कए कहलकै। 'पूछइ-ए केना अनठा कए!'

रिनियाँ दुनू मायधी लए छह टा रोटी पकेलक। रोटी पर नून तेल मरचाइ देलकै। तीनटा माय के हाथ मे पकड़ा देलक। तीनटा अपने लेलक।

छोटुआ काम पर सए आयल तऽ ने हाथ धोलक, ने पएर धोलक। दोसर पेंट अंगा पिन्ह कए लालो ओइठिन चैल गेल। गुलो बिछौन पर पड़ल रहल। बराती एतै तब जायत। बराती बारह बजे राति मे ऐलै। जलखइ मे चूड़ा के भूजा आ सेओ देलकै। गुलो एक प्लेट भूजा जेबी मे राखि लेलक। रिनियाँ खेतै। खाना मे माछ-भात रहै। गुलो खा कए मस्त भाए गेल।

भोरे रिनियाँ पुछलकै—'बबा! हमरा लए एक कुटिया माछ नै आनलहक?'

गुलो फटकारलकै—'ई छौड़ी पागल छै! आ गे, भूजा तऽ जेबी मे लाए लेलिऐ। माछ केना लैतिऐ?'

रिनियाँ भूजा फाँकैत रहल। चाह पीऐत रहल।

छोटुआ साइकिल कए चमकेने रहइ-ए। रोज कपड़ा सए पोछइ-ए। साइकिले सए काम पर जाइ-ए। कहियो काल केलियर पर जरना आनइए। बबा कए कहइ-ए—'एकर मूठ बदलि दहक। हाथ ससैर जाइ छै।'

गुलो खौंझा कए कहै छै—'आइ दिन सए आब भाए गेलौ! ई दहक तऽ ऊ दहक। राखि दही साइकिल। घर मे पड़ल रहतै।'

'केलियरो तऽ बदलि दहक। घर मे पुरनका राखल छै। ऊ बढ़ियाँ छै। एकर तऽ इसपिरिंग टूटि गेलइ-ए।'

'ऊहो बदलै मे पाँच टका लागतै। रहय दही।'

छोटुआ कननमुँह भेल काम पर चैल जाइ-ए।

आरा सए गुलो दू घौर केला काटि कए आनलक-ए। एकटा मे दुइए हत्था छै। चपड़ा छिऐ। तरकारी हेतइ। दोसर घौर विलायती छिऐ। रौद मे झरैक गेलइ-ए। लेकिन पाकए लागलइ-ए। रिनियाँ पाँच-सात टा छीमी एक्के बेर खा गेलइ। गुलो बरजै छै—'ई छौड़ी राछछनी जकाँ करै छै। एते कफ छै आ केला भकोसने जाइ छइ।'

रिनियाँ बक सिन केला छोड़ि दइ-ए। आइ कालि्ह गाछी मे ऊ टिकला खाइत रहइ-ए। पेट मे दरद होइ छै।

गाछी देने एकपेरिया छै। बटोही टिकला तोड़ि लै छै। गुलो मचान बना रहल-ए। लुच्ची गाछक ठीक निच्चा मे। लुच्ची ललिया लागल छै। आब दिन-



राति ओगरबाहि करय पड़तै। टौर्च नै छै। गुलो सोचने-ए कोनो दिन मालिक लग जाएत। कहत एगो टौर्च कीन दिऔ। तीन सेल वला। बारत तऽ सौंसे गाछी इजोते इजोत। नै देतै तऽ एक्को गो आम कि लुच्ची भोग नै हुअय देत।

दूधवला बाँस मांगै छै। पाँचटा बाँस। बीट लगाएत। पान सय टका देतै। ओना कोनो बाँस डेढ़ सय सए कम मे नै भेटै छै। गुलो चोरा कए बेचत तैं एक्के सय मे दिअय पड़तै।

छोटुआ दुपहर मे खाइ लए आयल तऽ घूरि कए काम पर नै गेल। भगल काए लेलक। गाछी जा कए कहलकै—'बबा! गमछी सए पेट बान्हि दएह। बहुत दरद होइ छै।' आ आह-ऊह करैत मचान पर पड़ि रहल। गुलो बूझि गेल साला नाटक काए रहल-ए। बेस! गुलो गमछी बान्हि देलकै। छोटुआ कनी काल पड़ल रहल। फेर फुरफुरा कए उठि गेल। लुच्ची गाछ पर चढ़ए लागल। गुलो पुछलकै—'दरद छूटि गेलौ रे?'

'हँ, आब कमि गेलै।'

छोटुआ दू टा लाल-लाल लुच्ची तोड़लक। ओकरा जेबी मे राखलक आ पार भाए गेल। दोस संगे किरकेट खेलाइत रहल। आइ फेर छौड़ा साठि टका डुबा देलकै। गुलो कए अपसोच होइत रहलै।

गुलो एक अंगुरी के एगो टौर्च किनलक-ए। फोकसिंग खूब मारइ छै। गिरहत नै देलकै। अपना पचास टका लगा कए किनलक। हाथ मे लाठी आ जेबी मे टौर्च लेने गुलो भोरे गाछी चैल जाइ-ए। ओत्तहि खाइ-ए। आठ बजे राति मे घर चैल आबइ-ए।

ऊ नियारिते रहय जे आब रातियो कए ओगरबाहि करत कि एक राति चोरबा सौंसे गाछक लुच्ची सिसोहि लेलकै। गाछ कए देख कए गुलोक अतमा खंगरैत रहलै। धीयापूता आस लगेने रहइ पाकतै तऽ खूब खायब। दू-चारि सय के बेचियो लैत रहय। गिरहतो कए दाए आबैत रहइ। कुइछ नै भेलै। एकटा ठकुरबा सेनियल चोर छै। ई ओकरे काम छिऐ।

दुपहर मे रिनियाँ खाइक लाए कए आबै छै तऽ साँझ धरि गाछी मे रहइ छै। टिकला बीछै छै। जरना-काठी जमा करै छै। अरिकंचनक पत्ता

तोड़इ छै। घास गढइ छै। अइ अंगना ओइ अंगना के टहल करइ छै। कोय खाय लए देलक, कोय मकइ के बाइल तऽ कोय दू-चारि गो टका दाए देलक।

एक दिन दुपहरिया मे बरस्सेर वाली एलै आ कहलकै—'हय रिनियाँ, लुच्ची तोड़बहक?'

'नै हे भौजी, हमरा डर होइ-ए।'

'धुह! डर कथी के? चलह नै। तू खाली ठाढ़ रहिहह। तोड़बै हम ने।'

रिनियाँ संग लागि गेल। लाट मे झुनियो रहै। ओकरा डर होइत रहइ। बरस्सेर वाली रमन के गाछी मे ढुकल आ लुच्ची तोड़ि-तोड़ि खोंछा मे राखए





लागल। रिनियाँ आ झुनियाँ के कलेजा धक-धक करैत रहै। एन्ने ताकए, ओन्ने ताकए। कोय आबइ तऽ नै छै! रिनियाँ बाजल—'भौजी! लुच्ची मे हमरो आउर के हिस्सा हेतह।'

'हिस्सा कोन बात के? तू कोनो तोड़ै छहक? दू-चारि गो खाइ लए दाए देबह।'

रिनियाँ बूझि गेल। झुनियाँ कए कहलक—'तू बोरा के मुँह बिथारने रह। हम तोड़ि कए गिरेने जेबौ।'

जा बरस्सेर वाली दस-पनरह गो तोड़त ता रिनियाँ पचास-साठि टा तोड़ि लेलक। झुनियाँ कहलकै—'हे गय! आब छोड़ि दही ने। कोय देख लेतौ।'

रिनियाँ हाँइ-हाँइ थोड़े और तोड़लक। दुनू अढ़े-अढ़ जाइत-जाइत एकटा बँसबारि मे नुका रहल। लुच्ची एक सय सए कम नै रहइ। दुनू खाए लागल। रिनियाँ पुछलकै—'कोय पकड़बो करतौ गे?'

'एँह! आब के पकड़तै। गाछ लग रहितिऐ तब ने?'—झुनियाँ कए आब कोनो डर नै रहै।

'बाप रे! बरस्सेर वाली कए एक्को पैसा डर नै होइ छै। जँ पकड़लकै तऽ गारि-मारि सए तर काए देतै। अखैनियो तोड़िते हेतइ कि चैल गेलै, नै जानि।'—रिनियाँक कलेजा आब थिर भाए गेल छै।

'गै सौतिन सब! तू सब एत्तऽ छिही'—बरस्सेर वाली भरि खोंछा लुच्ची लेने ओइ दुनूक आगू मे ठाढ़ भाए गेलै।

'पकड़लकह नै?'—रिनियाँ पुछलकै।

'ऊ बभना हमरा पकड़त? कहइ जे छै! केहन-केहन गेल्हा तऽ मोंछ वला एल्हा!'

लुच्ची खाइत-खाइत ओइ दुनूक मन फेर देलकै। जे बचल रहै, तकरा बाँटि लेलक। बीस-बीसटा हिस्सा भेलै।

अनवर के मोबाइल पर रूनियाँ के फोन एलै। गुलो गाछी मे रहइ। रूनियाँ माय सए गप केलक। कहलकै—'नतनी कानै छौ। कहै छौ नाना लग जेबइ। बबा किऐ नै आबै छौ? हमरा सए कोनो तकलीफ भेल छै?'

बेलावाली बेटीक गप सुनि कए व्याकुल भाए गेल। गाछी जा कए गुलो कए कहलकै। गुलोओ के सुरता खींच लेलकै। छोटुआ सुनलक जे बबा दीदी लग बीना जेतै तऽ जिदे धाए लेलक—'हमहूँ जेबै।'

अगिला दिन रवि रहै। गुलो चारि बजे बीना चैल देलक। छोटुओ रहै। रिनियाँ वला लुच्ची सनेस बनि गेलै। नाति-नातिन लए गुलो और कएटा चीज किनलक। बिस्कुट, चौकलेट, सेओ। नाति-नातिन कए सेओ बड़ पसिन छै। गुलो डेढ़ किलो झिंगा आ एक किलो साग किनलक। पता नै, रूनियाँ कए साग-सब्जी छै कि नै। टैम्पू पर चढ़ल आ एक घंटा मे बीना पहुँच गेल।

रूनियाँ कहलकै—'बबा, चूड़ा भूजि दइ छियह?'

'नै बेटा, चाहे बनबह।'—गुलो कए बेरहटक हिस्सक नै छै। छोटुआ खेलक।

नाति-नातिन सनेस खाइ मे मगन रहइ। रूनियाँ चाह लाए कए आयल तऽ देखलक छौड़ा-छौड़ी चौकी तर ढूकि कए लुच्ची खाइ छै। बाजल—'बबा, देखहक सब लुच्ची खा गेलइ। बुढ़बा की कहतै! नहिराक सनेस अपने खा गेल। रूनियाँ लुच्ची छीनलक। चारिए टा बचल रहइ। ददिया ससुर कए कहलक—'देखथिन! ई दुनू सबटा लुच्ची खा गेलइ। एतने बचल छै।'

'अच्छा लाबह। धीयापुता खेलकै ने! हमरा लए एतने बहुत छै।'

राति मे रूनियाँ झिंगा के तरकारी आ रोटी बनेलक। दूध तऽ रहबे करइ। भैंस आ गाय दुनू लागै छै। दूध बेचबो करइ-ए।

बिहान भने भात-दालि, करेलाक तरुआ आ साग बनलै। खा-पी कए गुलो जाए लागल। बेटी घेर लेलकै—'बबा, आइ रहि जा। माछ मंगबै छिऐ।'

गुलो रहि गेल। लेकिन भोर होइते जाए ले तैयार।

रूनियाँ कहलकै—'बबा, रोटी-तरकारी बनबै छिऐ। भैंसों दूहै छै। जलखै खा कए जइहऽ। चैल जेबहक तऽ कखैन की खेबहक, नै खेबहक।'

'नै दाइ, जाय दे। लेट हेतै तऽ छोटुआक काम छूटि जेतै। काल्हियो हरज भाए गेलै।'— गुलो बुझइ-ए मेजुमानी कएला सए ओकर दिन नै जेतै।

रूनियाँ बिना चाह पीने नै जाए देलकै।



गुलो दूध वला हाथे जे पाँचटा बाँस बेचने रहय, से टाका देलकै। रिनियाँ पहिने सए सोचने रहय अइ सए पाठी कीनत। बरस्सेर वाली कए एगो करिक्की पाठी छै। रिनियाँ दामो छाप काए लेने-ए। पान सय मे देतै। बेलावाली कहै छै—'गय, अपना नै धारै छौ। देखलिही रहय, पोसिया लेने रहिऐ से पाठी रहलइ? छोड़ि दे। नै ले।'

लेकिन रिनियाँ जिद धेने छै—'तोरा ने नै धारलकौ। हम ई लेबै। हमरा धारतै।'

रिनियाँ पाठी लाए आनलक। छिट्टा मे घास ओगारि देलकै। पाठी टोंगय लागल। घड़िए घंटा मे पाठी रिनियाँ कए चीन्ह गेलै। रिनियाँ जहाँ कतहु चलल कि पाठी भेंमियाए लागल। देखलक जे आबि गेलै तऽ मेमियाए लागल। रिनियाँ ओकर थुथुन उठा कए चुम्मा लै छै। पुछइ छै—'की भेलौ?'

बड्ड बरसा भेलइए। दू दिन पानि होइते रहलै। आरा मे जे मूंग छै तइ मे पानि लागल छै। नै जानि मूंग रहतै कि गलि जेतै। मूंग तिलकय लागल



रहै। रिनियाँ करिया छीमी बिछलक। एक पौवा दाना निकललै। सतलरेनमा कते दिन सए कहै छै—'पहिल तोड़ मे सए हमरो थोड़े दीहे। दालि खायब।'

रिनियाँ सबटा मूंग ओकरे दाए एलै। बीस गो टाका देलकै। बेलावाली कहबो केलकै—'गै, अपना दालि के बेगरता नै रहै? अपना नै रहै सख?'

रिनियाँ जुगता कए टाका राखलक। बाजल—'ई टका हम ककरो नै देबौ।'

रूनियाँ के दीयर नेरहू एलै। आबि कए दोकान पर बैठ गेलै। रिनियाँ पुछलकै—'कोने एलहक-ए?'

'घुमइ लए।'

'घुमइ लए एलहक-ए तऽ जा ने! एतए किए बैठल छहक? जा, बैरिया मंच सए घूमि आबह।'

नेरहू कोनो जवाब नै दै छै। खाली मुस्कुराइ-ए। रिनियाँ पुछै छै—'पीसा के घर पर जेबहक?'

'ओत्तै तऽ रहिऐ।'

'तऽ आब गाम जेबहक?'

'नइ, आइ रहबइ।'

'कतए रहबहक?'

नेरहू कोनो जवाब नै दै छै। खाली मुस्की छोड़ै छै।

'आइ तोरे अइठिन मेजमानी करतौ।'—उमेशबा ओइ पार सए चिचिया कए कहै छै।

'रहऽ हौ। पनरह दिन मेजमानी करह।'—उमेशबा नेरहू सए चौल करइ छै।

'एतए रहतै से एतए ने घर छै, ने दुआरि छै। ने पलंग छै। ने टीभी छै। ओतेक आराम, ओतेक सुख छोड़ि कए एतए किए रहतै!'—रिनियाँ कए मेजमान राखब पहाड़ सन लागै छै।

नेरहू चुपचाप रिनियाँ कए देखैत रहइ-ए आ मुस्की छोड़इ-ए।

रिनियाँ पुछै छै—'चाह पिबहक?'



'नइ।'

'तब जा ने अन्हार भेल जाइ छह।'

रिनियाँ के बात के कोनो असर नइ होइ छइ। नेरहू बैठल रहइ-ए आ टुकुर-टुकुर रिनियाँ कए ताकइ-ए।

रिनियाँ टरि गेल। घूरि कए आयल तऽ देखलक नेरहू बैठले छै। कने कालक बाद नेरहू उठल आ राजना पुला पर चैल गेल। पुला पर अदहा घंटा बैठल रहल। ओतए सए उठि कए खैरबन्नी चैल गेल। रोडक कात मे बैठ रहल।

रिनियाँ माय सए पुछलकै—'नेरहू कतए गेलौ? ऊहो खेतौ?'

बेलावाली छोटुआ कए कहलकै—'जो देख आबही कतए छै। साइकिल तऽ छेबे करै।'

नेरहू छोटुआ संगे चैल आएल। दोकानक बेंच पर बैठ गेल।

रिनियाँ भानस करय लागल। माय कए कहलकै—'ओकरा कही चैल जेतौ।'

माय बाजलै—'ओकरा केना कहबै चैल जा। कुटुम छिऐ ने!'

'हँ, कही जेतौ।'

'चैल जाइ लए किए कहै छिही? कुइछ कहलकौ-ए?'

'नइ। कही चैल जेतौ।'

'की बात छिऐ? कह ने।'

'हमरा डर होइ-ए।'

'कथीक डर होइ छौ?'

'ओकर मुँह देखै छिऐ तऽ डर होइ-ए।'

बेलावाली चुप भाए गेल। सोचए लागल।

खायल भाए गेलै तऽ गुलो नेरहू सए पुछलकै—'कतए सुतबहक? एतए की पीसा ओतए?'

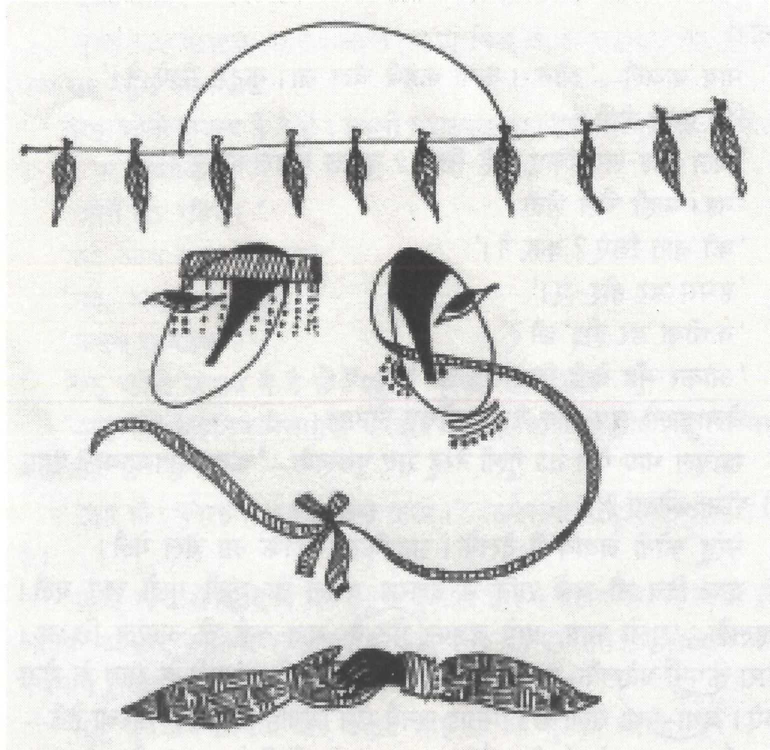
नेरहू कोनो जवाब नै देलकै। साइकिल लेलकै आ चैल गेलै।

एक दिन नौ बजे राति मे दशरथ मंडल के मुंशी गुलो लग एलै। कहलकै—'गुलो भाय, एगो बड़का पेंट के बात कहै ले आएल छिअह। हमरा कंपनी पठेलकै-ए। नेपाल मे एगो लड़का छै। कंपनी के साढ़ू के बेटा छिऐ। पथा-पथा वला छै। मिठाइ बनबै छै। बियाह मे जतेक खरचा हेतै—दस बीस हजार-से कंपनिए देतह। घरक लड़की छिऐ। सब चीज देखल-

सुनल छै। एतेक सुंदर आ काजुल लड़की और कतए भेटतै। तोहर की विचार से कंपनी पुछलकह-ए।'

गुलो गंभीर भाए गेल। कने काल सोचैत रहल। फेर बाजल—'भाय, हम कंपनियो के आ तोरो स्थान दइ छिअह। हमरा चारि महीना के टेम दएह। हमर जेठका बेटा छै। लाख नालायक सही, लेकिन छिऐ तऽ बेटे। ओकरो सय पूछए दएह। नै पुछबै तऽ कालि्ह भाए कए कहइ लए भाए जेतै जे ने कहलक, ने पुछलक, ने जानलिऐ। भारी अपजस भाए जाएत। तैं चारि महीना थम्हि जा।'

दशरथ मंडल मुंशी के बाट ताकैत रहय। गुलोक जवाब सुनि कए बाजल—'कोनो हरज नै।' आ घर चैल गेल।





एक दिन अरजुनमा के फोन एलै। अनवर के मोबाइल पर। पुछलकै—'माय-बबा केहन छै?'

अनवर कहलकै—'केहन छौ से जानि कए की करबिही? अपन फिकिर कर। अपन बौह-बेटा के फिकिर कर। माय-बाप के फिकिर काए कए की हेतौ? खेलकौ कि भूखल छौ; मरलौ कि जीलौ तै सए तोरा कोन मतलब? खबरदार! अब फोन नै करिहे।'

अनवर फोन काटि देलकै।

बेलावाली अनवर कए कहलकै—'हमरा बेटा छै से! हमर बेटा तऽ मरि गेलै।' आ कानय लागल।

गुलो के मन खराप छै। खोंखी करैत-करैत बेदम भाए जाइ छै। भरि दिन थोकड़ा ओलैत रहलै। दू सय टका मे दू कट्ठाक थोकड़ा ओलइ के बात भेल रहइ। माटि-गरदा सए सौंसे देह भरि गेलै। कतेक गरदा फेफड़ा मे गेल हेतइ। घाम आ गरदा सए देह नोचइ छै। खेत सए घुरल तऽ बुझेलै जेना खौंत फुकने हो। रिनियाँ कए जल्दी-जल्दी पंखा हौंकइ लए कहलकै। रिनियाँक हाथ मे छोटका बंगलिया पंखा रहइ। ओइ सए हवा कम लागइ छै। अखैन बिहाड़िए गुलोक खौंत कए ठंढा कए सकइ-ए।

'जो दौड़ कए पंखा ला।'—गुलो रिनियाँ कए हुकुम देलकै।

'पैसा नै लेतै?'—पूछैत रिनियाँ कए डर भेलै।

'ले ने पैसा।'—गुलो गरजल।

'दे ने पैसा गे।'—रिनियाँ माय पर तमसायल।

बेलावाली खूँट खोलि कए पैसा देलकै। गुलोक प्रचंड रूप देख कए

कुइछ नै बाजल। आन दिन बहस करए लागितइ। दोसर पंखा की हेतै? अही सए काम चलाबह ने!

से पंखा अगिले दिन टूटि गेलै। रिनियाँ जोर-जोर सए पंखा चलबैत रहइ। खुट्टा मे ठोकर लागलै कि ताड़ के पत्ता डंटी सए बाहर आबि गेलै। पंखा दस टका मे देने रहै। गुलो पंखा लए झखइ छै। अनवर कहलकै—'जा ने, बदैल देतह। ई कोनो बात भेलै। काल्हिए पंखा लेतै आ आइ-ए टूटि जेतै! आब सब चीजे नकली भाए गेलइ-ए।'

'आब बदलतै से! ऊ नंगड़ा एक नम्मर के ठेठा छै!'—रिनियाँ बाजल।

गुलो असमंजस मे रहय। अनवर ठेलिया कए पठेलकै—'एक बेर कहि कए देखहक ने।'

गुला जा कए नंगड़ा कए कहलक—'हे रे बाबू! एहने पंखा बनबै छिही? देखही तऽ। ई तऽ एक्के दिन मे टुटि गेलौ।'

नंगड़ा बहस नै केलकै। पंखा कए उनटा-पुनटा कए देखलकै आ बेटा कए कहलकै—'हे रे! दोसर दाए दही।'

गुलो डोला कए देखलक। पंखा खूब हवा दैत रहै।





आम लागय लागलै। गोटे आधे खसइ छै। गुलो पहरा बढ़ा देलक। गाछी देने राही मोसाफिर जाइत रहै छै। जहाँ आम देखलक कि उठा लेलक। जकर गाछी बगल मे छै सेहो उठा लै छै। तैं नजर राखय पड़इ छै। एक दिन रमन आम उठबैत रहइ कि रिनियाँ दौड़ल—'हौ, आम किए लइ छहक?'

'आम हमर छिऐ।'

'तोहर गाछ छह ओत्तय आ आम गिरै छह एत्तय।'—रिनियाँ आम उठबैत बाजल।

'ई दाए दे। हमर कचका लाए ले।'

'अपन राखह। हमरा नै चाही कचका।' रिनियाँ आम लाए कए मचान लग चैल आयल। सुना कए बाजल—'लोभी केहन छै!'

आइ-काल्हि भोर मे गुलो दोकान पर रहइ-ए। बेलावाली आ रिनियाँ अन्हरोखे गाछी चैल जाइ-ए। खसलहा आम बीछइ-ए। दू-चारिटा भेट जाइ छै। अइ बेर आम बड़ कम छै। आन बेर बेलावाली एक हजार के आम बेच लैत रहय। टका गाछिए मे गाड़ि दइ। अइ बेर नै हेतै। अखैन धरि पचपने टका के आम बेचलक-ए।

बम्बइ मे एक्के ठाढ़ि मे दस-बारह टा आम के घौदा छै। रिनियाँ सोचने-ए ई घौदे मालिक कए दाए एबै। मालिक बड़ खुश हेतै। एक बेर रुनियाँ गछपक्कू आम लाए कए गेल रहै तऽ मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकानि खाइ लए देने रहै।

रिनियाँ असकरे दू दिन मूँग तोड़लक। एक-एक छिट्टा। एक दिन दुनू मायधी तोड़लक। दू टा जनो तोड़लकै। रिनियाँ मूंग सुखेलक। डंगेलक। आठ-नौ किलो तैयार भेल हेतै। एक छोहन और टुटतै। ओइ मे जे निकलै।

पानि जे नै भेलै से मूंग मुनही भाए गेलै। गुलो कहै छै—'मूंग तैयार भेल छै से सबटा गिरहत कए दाए एबै।'

बेलावाली जोड़इ छै। हर लागलै। बीया लागलै। सबटा दाए एतै तऽ पूंजियो डूबि जेतै। कहइ छै—'एते जे खरचा भेलै से घर सए देबहक? एहन खेती लोग किए करतै?'

गुलो कए तामस उठि जाइ छै—'मादरचोद! जो ने सबटा बेच कए गीड़ि जइहए।'

बेलावाली गुम पड़ि जाइ-ए।

रिनियाँ के पाठी आब कनी हरिएलइ-ए। चाह बनेला के बाद गुलो पत्ती फेक दइ। आब नै फेकइ-ए। सबटा पाठी खा जाय छै। रिनियाँ गाछी गेल तऽ पाठियो कए लेने जाइ छै। पाठी भरि दिन गाछी मे चरइ छै। रिनियाँ ओकरा माला पिन्हा देने छै। कारी रंग पर उजरका माला बड़ सुन्नर लागै छै।

गुलाबखास आ बम्बइ दू-चारिटा कए रोज खसैत रहलइ। आब बुझाइते ने छै जे गाछ मे आम छै। गुलो सोचिते रहल जे थोड़े बम्बइ गिरहत कए दाए एबै। लेकिन से भेलै नै। जे खसइ से कोय ने कोय खा जाइ। कहियो छोटुआ, कहियो रिनियाँ। अपनो दुनू परानी कए जी रहइ। दस-बीस टका के बिकियो जाइ। गिरहत लग पाँच-दसटा लाए कए जइतिऐ तऽ पुछबे करितिऐ—'मर! एतने आम भेलौ रे?' गुलो की जवाब दइतिऐ। गिरहत कए कतबो बुझाबितइ तऽ नै पतियाबितइ जे अइ बेर गाछ मे बड़ कम आम रहइ। अइ सए नीक जे एक्कोटा नै देतइ। मालदह आ कलकतिया मे थोड़े आम छै। लागय लागतै तऽ गिरहत के सामने मे तोड़त आ बाँटि देतै।

बेलावाली कए बोखार लागि गेलै। उतरबे ने करै छै। दू-दूटा गोली खेलक। कोनो फेदा नै भेलै। दम फुलै छै। राति अदहो टा रोटी नै खेलकै। कमजोरी छै। दिन भरि पड़ल रहइ-ए। साँझ मे दोकानक आगू रोड पर बैठ जाइ-ए। गुलो आ रिनियाँ के बाट ताकैत रहइ-ए। गोसांइ डुमानी बेर मे रिनियाँ पाठी संगे गाछी सए घुरइ छै। अन्हार भेल तऽ गुलो घुरल। साँझ कए गाछी मे बड्डु मच्छर रहै छै। काटि कए देह फुला दै छै। गुमकी रहल तब तऽ प्रान बेकल भाए जाइ छै। गुलो, बेलावाली आ रिनियाँ रोडे पर बैठल-बैठल आमक जोड़-घटाव करइ-ए। कोन छौड़ा, कोन मौगी काए टा आम लाए गेलइ। कएटा खोधलहा, कएटा फाटल आ कएटा सड़लहा रहइ।



बेलावाली कए खौंत उठइ छै आम किए लाए गेलै। रिनियाँ सए जिरह करइ छै—'तू रही कत्तए? किए टपय देलही?'

रिनियाँ तामसे चिचिआइ-ए—'हम की करबौ गे! बबा नै छीनय देलकौ।'

'ई बुढ़बा सब कए सह देने रहै छै। तू दुनू सबटा बिलटा देबही।'

रिनियाँ कए नेस देलकै। चिचिया उठल—'हम की कोलियौ गे?'

गुलो गाछी सए घुरले रहइ। मन पितायल रहै। ऊहो चिकरल—

'मादरचोद! चुप रहबे कि नै?'

'देखहक!' कहि कए बेला वाली चुप भाए जाइ-ए। फेर बाजइ-ए-'हमरा तऽ बोखारे ने छौड़ै छै। हम रहितिऐ तऽ ककरो टपय दइतिऐ!'

राति मे रिनियाँ मूंगक उसना केलकै। ककरो बाड़ी सए एगो नेबो आनने रहइ। गुलो ओइ नेबो कए उसना मे गाड़ि देलकै। दुइए-चारि कर तऽ खेलकै आकि दम फूलय लागलै। गुलो राति भरि छटपट करैत रहल। निन्न नै भेलै। दम फुलइ आ खोंखी होइ। दिनो मे गुलो कुइछ नै खेलक। मुँह मे जहिना कुइछ लइ कि साँस अटकय लागइ। गाछी नै गेल। मचान पर पड़ल रहल।

रिनियाँ माय कए कहलकै—'बीड़ी पी-पी कए खोंखैत रहै छौ। एते बीड़ी कहूँ लोग पीलक-ए! राति-दिन बीड़ी सोंटैत रहै छौ।'

गुलो अपराधी जकाँ चुपचाप सुनैत रहल। ओकरा एक्केटा चिंता धेने छै। आम के की हेतै? बुढ़िया कए बोखार लागल छै। ओकरा अपना उठले ने होइ छइ। छौड़ी असकरे कखनू घर तऽ कखनू गाछी दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै। ओकरा घर आ गाछी सए कोनो मतलबे ने छै। सूति कए उठल आ चाह पी कए मिल पर चइल गेल। गाछी के जोगतै? लोग सबटा आम तोड़ि लेतै।

रिनियाँ दू किलो गहूम रमपरसादक मिल पर दाए एलै। आँटा सठि गेल छै। पिसाइ दइ लए पैसा माँगै छै—'माय, तीन गो टका दही।'

'छोटुआ सए लाए ले। दसटकही लेने रहइ। बचल हेतै।'

'आब ऊ देतौ? सब चाटि गेल हेतौ।'

'पाँचे टका के घुपचुप खेने हेतइ ने? पाँचटा तऽ बचले हेतै। जो ने। माँगि कए ला ने। ठकना दोकान दिस हेतौ।'

रिनियाँ घुरि कए आयल। कहलकै—'नै देलकौ। कहइ छौ हम नै लेलिअइ।'

'ई छौड़ा एक्कोटा पैसा घर मे नै रहय दइ छै। आब की करबइ हौ दैब!'—बेलावाली छोटुआ के खिधाँस करय लागइ छै।

रिनियाँ सुनैत-सुनैत अकच्छ भाए जाइ-ए। खिसिया कए कहै छै-'भक! दही ने गे! मिलो बन्न काए देतइ।'

राति भेल जाइ छै। ओकरा रोटियो पकबै के चिंता छै। कहइ छै—'देबही कि नै देबही? ने तऽ हम जा कए सूति रहबौ।'

बेलावाली अछता-पछता कए साड़ी के खूँट सए पैसा निकालइ-ए। चारिए गो टका छै। तीन गो रिनियाँ कए देलकै। आब एक्के टा बचलै। आ पहाड़ सनक राति छै।

'भगमान! तू ही देखिहक!'—बेलावाली देव-पितर कए बता कए निचेन भाए गेल।

कंदाहावाली जहिया सए नहिरा गेलइ-ए, गुलो कए खायल नै जाइ छै। कंदाहावाली बड़ चिक्कन भानस करैत रहइ। जेहने तरकारी, तेहने सोहारी। गुलो खूब खाइ। बड़ चहस्गर लागैत रहइ। रिनियाँ कए ओहन नै काए होइ छै। तरकारी जेना-तेना उसैन दइ छइ आ रोटी कतौ मोट तऽ कतौ पातर।



रोटीक कोर काँचे रहि जाइ छै। कम खेला सए गुलो कमजोर भाए गेलइ-ए। फक-फक करइ छै।

गुलो सात-आठ टा नभका खुट्टा काटि कए राखने-ए। घरक कएटा खुट्टा सड़ि गेल छै। आइ बदलत, काल्हि बदलत करइत रहइ-ए। आब तऽ सेके मे लागइ छै जे कुछो करत। कोनो काम करइ के मन नै करइ छै। होइ छै पड़ल रही।

बेलावाली भारी चिंता मे पड़ल-ए। बुढ़बा कए की भाए गेलै! अनवर के नेहोरा करइ-ए—'अनवर बाउ! बुढ़बा के कोनो दवाइ नै देथिन?'

'अखैन थम्हह। एकरा सुइया दिअय पड़तै।'—'अनवर सोचइए गुलो कए भिटामिन बी के सुइया देनाइ ठीक हेतै।

रिनियाँक पाठी खाइ-पीअइ नै छै। नै जानि की भाए गेलै। माय बेर-बेर कहै छै अपना बकरी नै धारै छौ; बेच ले। हारि कए रिनियाँ पाठी बेच लेलक। जखैन पाठी जाइत रहइ, रिनियाँ उदास रहय। उजरका माला अखैनियो शोभैत रहै।

छोटुआ आइ फेर देखलकै। जलेसराक घर मे रिनियाँ टीभी देखैत रहइ। चौकी पर ओकर दुनू बेटा सए सटि कए बैठल रहइ। छोटुआ कए तामस उठल छै। आइ छौड़ी कए मारतै। जलेसराक पलिबार ठीक नै छै। सब चोर छिनार छै। पीअइ छै। रिनियाँ कए देखिते छोटुआ जिरह करय लागल—'हे गे! कतए रही?'

'कतौ रहिअइ तोरा कोनो मतलब छौ?'

'ओकरा अंगना किए जाइ छीही?'

'हँ, जेब्बै। तू की करबिही?'

'देखबिही?'—छोटुआ कसि कए एक चाट लगेलक। रिनियाँ कानय लागल। कानैत-कानैत अंगना चैल गेल। ओसरा पर बैठ कए कानैत रहल।

गुलो कए छोटुआ पर तामस उठलै। गरजल—'छौड़ी कए किए मारलिही रे साला?'

'मारबै नै! जलेसरा अइठिन टीभी देखइ छह।'

'अइ छौड़ा कए जेठो-छोट के विचार नै छै। केना कए जेठ बहीन कए मारल जाइ छै!'—बेलावाली छोटुआ कए लाज लगबइ छै।

गुलो दोकाने पर सए चिचिआइ-ए—'गे छौड़ी चुप रहले।'

आन बेर गुलो रातिओ कए गाछी ओगरैत रहय। अइ बेर नै ओगरि भेलै। आब ओतेक पैरुख नै छै जे राति-राति भरि जागल रहत। नढ़िया, खिखिर आ लोग कए होहकारैत रहत। अन्हर भोरे गाछी जाइ-ए। देखइ-ए सब आम पार। कतौ कोनो खाधि मे या जंगल-झौखड़ा मे दू-चारि टा भेटल तऽ भेटल। दिन मे जे खसइ छै से बेच लइ-ए। ओही सए नून-तेल चलइ छै।

बेलावाली अपने बाजइ-ए—'आन बेर तीन-चारि हजार के आम बेच लैत रहिअइ। अइ बेर कुछो ने हेतै।'

सब लक लगेने-ए। आम बेच कए रिनियाँ चप्पल लेत। जाड़े मे टूटि गेल रहइ। तहिया सए खालिए पएरे बुलइ-ए। अइ बेर नै छोड़त। लेबे टा करत। छोटुआ पेंट लेत। साइकिल ठीक करायत। बेलावाली गोसांइ घर पर पन्नी देत। गुलो कल ठीक करायत।

लेकिन कुइछ नै भेलै। दोगादोगी दू किलो चारि किलो आम बिकाइत रहलै। मगर पैसा कोन दोग दाए कए कतय चैल गेलै, तकर थाह नै रहलै। खाली छोटुआ टा एक सय बीस टका मे एगो पेंट किनलक। रिनियाँ चप्पल खातिर रूसले छै।

आम सठइ-सठइ पर रहइ। गुलो कए बेर-बेर रूना मन पड़इ। नाति-नातिन मन पड़इ। सब असरा लगेने हेतै। नाना आम लाए कए एतइ। गुलो रोज नियार करइ छइ आइ जाएत, काल्हि जाएत। मगर कोनो ने कोनो भांजी लागि जाइ छै।

एक दिन अनचोके कंदाहावाली पहुँच गेलइ। छोट भाय संगे कंदाहावालीक आगमन सब कए चकित केलकै।

गाछ सबहक आम टूटि गेलइ। तइयो रिनियाँ रोज गाछी जाइ-ए। पतनुकान लेने कोनो आम भट दए खसि पड़ै छै। रिनियाँ बड़ जतन सए आम उठबइ-ए। ओकरा निहारि-पिहारि कए देखइ-ए। बड़ खुशी होइ छै। गाछी जाइत रहय तखनिए कंदाहावाली एलइ। रिनियाँ कनी काल रुकि गेल। फेर जाए लागल तऽ पुछलकै—'गाछी जेबही सुजीत?' सुजीत दौड़ गेल। संयोग एहन जे जहिना ऊ गाछ तर मे ठाढ़ भेल कि एकटा गुलाबखास धब दए आगू मे खसलै। ओइ आम कए पजोठने सुजीत घर आयल—'ई हम्मर छिऐ।'



रिनियाँ सुजीत संगे खूब खेलाइ-ए। एक्को बेर छोड़ै नै छै। भौजीक अयने सब सए बेसी खुशी ओकरे भेल छै। आब ओकरा भानस नै करय पड़इ छै। खाली पानि लाबि दइ छै। दोकान सए सौदा आनि दइ छै। आब गुलो रुचि सए खाय लागल-ए।

दू दिनक बाद कंदाहावाली पैसा देलकै। गुलो पाँच किलो पन्नी कीन आनलक। साढ़े पान सय मे भेलै। पचास टका जन लेलकै। पन्नी पसारि कए बत्ती सए बान्हि देलकै। कंदाहावाली एकटा काज और केलक। गुलो कए कहलकै—'पपा, कल वला मिसतिरी कए बजा आनथिन। ठीक काए देतै।'

गुलो बाजल—'कनियाँ, ओइ मे एक हजार लागतै। हमरा हाथ पर एक्को गो टका नै छै।'

'बजा कए आनथिन ने। जे लागतै से देबै।'

गुलो कए खुशी सए रहल नै गेलइ। दोकान छोड़ि कए मिसतिरीक खोज मे चइल देलक। इनरा गानहीक दोकान पर गेल। मिसतिरीक अड्डा वएह छिऐ। रिनियो कए नै रहल गेलइ। पाछू सए ऊहो गेल।

परता कल मे बड़ भांगठ रहै छै। दुपहर धरि कल ठीक भेलै। पानि आबय लागलै। सब सए पहिने गुलो कपड़ा साफ केलक। भरि मन नहायल। छह महीना पर आइ कल ठीक भेलइ-ए। गुलोक रोम-रोम पुलकित छै। आइ ऊ बेटी लग जायत। आम लेने जेतै।

गुलो बीना सए घुरय लागल तऽ रूनियाँ एक अढ़इया मकइ, एक किलो मूंग आ दूटा कदुआ देलकै। घर आयल तऽ पता चललइ छोटुआ काम छोड़ि देने छै। गुलो बीना मे रहय तऽ निचित रहय। कोनो टेंशन नै रहइ। एतय आबिते हजार टा फिकिर भाए गेलै।

गुलो पलाइ मिल पर गेल। दशरथ मंडल कहलकै—'अहाँक बेटा काम करइ के लायक नइ-ए। कहियो आबइ-ए, कहियो नै आबइ-ए। कहियो बिन कहले-सुनले दुपहर मे भागि जाइ-ए। काजक हरजा होइ छै। एना मे ओकरा के राखतै?'

गुलो बाजल—'की करबै। बच्चा छै, नाबोध छै। हम सब बुझेलिअइ-ए। आब ओना नै करतै।'

'बेस, काल्हि सए भेज देबै।'—दशरथक जवाब सुनि कए गुलोक माथ परहक बोझ उतैर गेलै।

कंदाहावाली जहिया सए आयल-ए, कोटा वला अरबा चाउर खाइ-ए। गुलो कए बारह किलो गहूम आ अठारह किलो चाउर भेटल रहइ। वएह चइल रहल छै। अरबा चाउर के भात ककरो नीक नै लागै छइ। लेकिन करत की? उसना चाउर अट्ठाइस टके किलो दइ छइ। ओतेक पैसा कतए सए एतै। कंदाहावाली कए नइ रहल गेलइ तऽ बाजल—'अरबा चाउरक भात आब नै धँसइ छै।'

बेलावाली सुनलक तऽ रिनियाँ कए हाक दाए कए कहलकै—'बबा कए कही उसना चाउर आनि देतै।'

गुलो सुनैत रहय। दोकाने पर सए चिचिया कए कहलकै—'हमरा पैसा छै। जो सतलरेनमा के दोकान सए उधारे लाइब दही।'

'सतलरेनमा के बोझ बढ़ल जाइ छै।'—बेला वाली कए चिंता होइ छै। 'ऊ काल्हिए सए तगेदा करय लागतै।'

'करय दही।' नीक भात खाइ के लोभ मे गुलो निफिकिर भाए जाइ-ए।

रूनियाँ जे कदुआ देने रहइ तइ मे एकटा खिच्चा आ एकटा जुआयल छै। रिनियाँ कदुआ फाड़ि कए देखबइ छै। गुलो सिखबइ छै—'छोलिका सोहि दही। बीया निकालि दही। कनी टा मीठा सोडा दाय दही। गलि कए भात भाए जेतौ।'

कदुआ राखि कए रिनियाँ दोकान दिस चइल जाइ-ए।

छोटुआ सुतले छै। लग जा कए गुलो हल्ला करइ छै—'रे साला! सुतले रहबिही? आइयो काम पर जेबही कि नै?'

छोटुआ फुरफुरा कए उठइ-ए—'हल्ला किए करइ छहक हौ? अखैन टेम भेलइ-ए?'

'रे साला! तू सुतले-सूतल बूझि जाइ छिही टेम नइ भेलइ-ए?' छोटुआ मुँह-हाथ धोइ-ए। दोकान पर आबि कए कहइ-ए—'चाह दएह।'

गुलो चाह चढ़ेने छै। छोटुआ ओइ मे और चीनी दइ छै, और दूध आ



पत्ती दइ छै। अपने सए बड़का गिलास मे गेंठ गिलास चाह ढारै छै।

गुलो चिचिआइ छै—'साला! हाहौती लागल छौ!'

'टका दएह।'—छोटुआ तुरुछ कए कहै छै।

गुलो तीन गो टका दइ छै। ओकर छोटुआ झिलिया कीनइ-ए आ चाह मे खसा कए पीअय लागइ-ए।

ननिहर सए एलाक बाद दू-तीन दिन धरि सुजीत कए संकोच रहलइ। तकर बाद धाख टूटि गेलइ। अनवर लग गेल आ पहिनुके जकाँ हाथ पसारि कए बाजल—'हौ! टका दएह।'

अरजुन पनिजाब सए घूरि आयल। देखलक गुलो बिछौन धेने छइ। सक्क नइ लागइ। देह मे कोनो दम नइ। रहि-रहि कए खोंखी करय आ कहरय। चाहक दोकान बन्न भाए गेल रहइ। गुलो सोचैत रहय कने टनगर हएत त फेर दोकान चलायत। पाइ नइ छइ जे इलाज करायत। असपतालक दवाइ सए कुइछ नइ होइ छइ। पिनसिल भेटतै त कोनो नीक डाकदर सए देखायत।

अरजुनमा कए कहै के मन नै करइ छइ। कहबो करतइ त ऊ कुइछ नै करतै। खाली मुँह खाली हेतइ। दुख हेतइ। उ त एलइ आ दुइयो-चारि दिन ने भेलइ कि चूल्हि अलग काए लेलक। बाप-माय के एक्को रत्ती चिंता नै भेलै। एक दिन गुलो कए पुछलकै—'चाहक दोकान चलेबहक? हेतह चलाय?'

अरजुनमाक आवाज मे कोनो दया-माया नइ रहइ। पूछइ के ढंग एकदम रोड़ाह जेना डंटा चलबैत हो। गुलो कए लागलै जेना अरजुनमा ओकर पुरुषार्थ कए ललकारैत होइ; ओकर सामर्थ्य कए माटि मे मिलबैत होइ। ओकरा भीतर तामसक लहरि उठलै। मन भेलइ अरजुनमा कए एहन चाट दइ जे दाँती लागि जाइ।

गुलो कुइछ नै बाजल। अरजुन ठाढ़ रहय। देरी बरदाश्त नइ भेलइ।

'दोकान मे टाट लगा दइ छिअह।' कहैत चल गेल।

गुलो कए लागलै जेना अरजुनमा कहैत हो—'टाटी पर दाए आबइ छिअह।' गुलोक हिया फाइट गेलइ। कानय लागल। निःशब्द रोदन। फेर

कखनू सूइत गेल। खाइयो लए नइ उठल।

अगिला दिन अरजुन टाट लगा देलकै। सड़क दिसका मुँह बन्न काए देलकै। अंगना दिसका खोलि देलकै। बुझाइते ने रहइ अइठिन कहियो दोकान रहइ। चूल्हिओ फोड़ि देलकै। कोनो निशान नइ बचलै।

दोकान रहै त गुलो घड़ी पहर बैठय। कोय आबइ त सुख-दुख बतिआबय। आब बइठइ के ठौर नइ रहलइ। घरे मे मचान पर पड़ल रहइए। दुनिया अन्हार भाए गेलइ।

अरजुनमा हुलकियो नइ दइ छइ। बाप मरलइ कि जिलइ कोनो परवाह नइ। मन भेलै त रिक्शा चलेलक नइ तए दारू पिऐत रहल। कंदाहावाली भानस अलगे करै छइ। रिनियां अलग करै छै। लेकिन रिनियांक पकायल रोटी गुलो कए धँसइ नइ छै। मन मारि कए कनी मनी खाइ-ए। धन्न छोटुआ जे कहुना नून-तेल जुड़ै छै। नइ त उपास पड़य लागितइ।

ठकहरबा भगिना सुनलकै जे ममा बड़ जोर बेमार छै त भेंट करय एलै। गुलो पुछलकै—'महिनदर! केहन छें?'

'हमरो हालत खरापे छह, ममा। पएर वला घा छुटिते ने छै। गोर फूलि कए तुम्मा भेल छै।'

'हम त चललियौ महिनदर! तोरो जल्दिए बोलाय लेबौ।'—एतबे कहि कए गुलो चुप भाए गेल। आँखि मूनि लेलक।

गुलोक गप सुनि कए महिनदर अवाक रहि गेल। ओकरा छगुन्ता भेलै जे ऊ कोन एहन बात कहलकै जे ममा खिसिया गेलै आ अवाच कथा कहि देलकै। ओकरा बहुत दुख भेलै। ओतए सए चुपचाप उठि गेल। रिक्शा पर बैठल अपन घर जाइत काल महिनदर कए लागैत रहलै जेना गुलो ओकरा पकड़ै ले आबैत होइ। ओकर सराप ओकरा खेहारैत रहलै। घरो मे ओकरा होइ जेना गुलो देहरि पर बैठल बिलाइ जकाँ टुकुर टुकर ओकरे ताकैत होइ। ओकरा डर भेलै।

महिनदर सतलराएन भगवानक पूजा करेलक। गुलोओ कए समाद देलकै—'ममा कए कहिहक आबइ लए।'

गुलो नै जा सकल। हालत ठीक नइ रहइ। रिनियां गेल। राति मे रिनियां कए नइ आबय देलकै। भौजी जिद करय लागलै त रहि गेल। भोरे खबर एलै जे गुलोक मन बहुत खराप छै। रिनियां कए बोलेने छै। रिनियां सुनलक त



तुरंत चलि देलक। भौजी कहैत रहलै चाह पी लीअ। लेकिन नै रुकल। सोझे मचान लग गेल। पुछलकै—'बबा, की भेलह?'

गुलो आँखि खोललक। बाजल—'एलह?' रिनियां कए देखि गुलो कए परम संतोष भेलै। कहलकै—'सौंसे देह मे लहर छौ।' रिनियां देह छुलकै। देह ठंढा रहै। ओकरा कुइछ ने फुरेलै ई कोन लहर छिऐ। बबा कए जाँतय लागल।

'हमरा तोरे चिंता अय।' गुलो बाजल।

'हमर चिंता कथी लए करै छहक? चिंता नै करह। ठीक भाए जेबहक। गोटी लाबि देबह।'—रिनियां सोचलक बरजेश सए पूछि कए गोली आनि देबइ।

'चाह पिलही?' गुलो बड़ सिनेह सए पुछलकै।

'नइ, कहाँ पिलिऐ। भौजी कहैत रहलइ। नइ पिलिऐ। लेट भाए जइतिऐ। बना कए लाबि दिअह?'—रिनियां कए भेलै बबा चाह नइ पीने छै।

'पिलिऐ। जो तूहों पी ले। छौ बचल कनीटा।'

चाह सेराय गेल रहइ। अदहा कप रहल हेतइ। गरमाबइ लए चूल्ही पर चढेतइ त जेहो छै सेहो जरि जेतइ। रिनियां ठंढे चाह पी गेल।

माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। ओतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माय कए कहलक—'माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।'

'ककरा सए लेबही? बरजेश सए? दोकान खोलि देलकै? ऊ त नौ बजे खोलै छै।'

'कते बाजलै देख कए आबै छिऔ।'—रिनियां उठि कए सड़क पर गेल। एगो घड़ी वला सए टेम पुछलक। आठे बाजल रहइ।

रिनियां घूरि आयल। माय कए कहलकइ—'अखैन आठे बाजल छौ। बबा लए की बनेबिही?'

'खेतौ की नै खेतौ। पुछही ने। रातियो ने खेलकै।'—बेलावाली कए चिंता रहइ बुढ़बा खाइ के गरे ने करै छै।

रिनियां मचान लग आयल। हाक देलकै—'बबा! हौ बबा!! सूति गेलहक?'

गुलो कोनो जवाब नै देलकै। रिनियां कनहा पकड़ि कए डोलेलकै—

'बबा!'

कुइछ नै। कतौ कुइछ नै।

'माय, दौड़ गे। देखही ने बबा कए की भेलै गे! बबा हौ! हौ बबा! बबा हौ बबा!'

रिनियां आर्त्तनाद काए उठल।

सब दौड़ल। कोनो अनुभवी नाड़ी देखलकै, छाती देखलकै, साँस देखलकै आ कहलकै—'हंसा उड़ि गेलै।'

चतुर्दिक मृत्युक हाहाकार पसरि गेलै। हवा मे लहराइत क्रंदन आ विलाप।

रिनियां अचेत भाए गेल। दांती पर दांती लागय लागलै।

गुलो कए देखइ लए डाकटर मलिक एलै। एक मिनट धरि एकटक ताकैत रहलै।

'रे गुलबा! आब के मालिक कहतै रे!' कहि कए डाकटर कानय लागल।

अरजुन रिक्शा लाए कए निकलि गेल रहय। पिंटू ओकर खोज मे निकलल। पिंटू आ अरजुन दुनू साढ़ू छिऐ। दुनूक घर थोड़बे दूर पर। पिंटुओ रिक्शा चलबइ-ए आ दारू पीअइ-ए। पिंटू रूनियां कए फोन केलकै। महिनदर कए खबर केलकै। अरजुन सिपौल टीशन लग भेटलै। पिंटू ओकरा संग केने घूरल।

सब आबि गेल रहइ। अरथी लए बांस आबि गेलै। कफन आबि गेलै। आब लकड़ी केना कीनल जेतै? ककरो जिम्मा मे पैसा नइ छइ। ने बेलावाली लग, ने अरजुन लग, ने कंदाहावाली लग।

बेलावाली कए बूझल रहइ कहियो काल गुलो नुका कए पैसा राखैत रहय। तैं ऊ दोग-सान्हि मे ताकय लागल। तकिया मे ठूंसल फाटल-चीटल कपड़ा उधेसलक। लेकिन कतौ कुइछ नै भेटलै। के देतै लकड़ी लए पैसा? एक गोटय कहलकै—'हौ, गाड़िए दहक ने। की हेतै?'

'ठीक छै। लाए चलह। गाड़िए देबै।'—अरजुन कहलकइ।

गुलोक अरथी उठलै। संग मे पाँच-सात गोटय रहइ। कठिहारी जाइ लए ककरो कहबो नइ केलकै। कठिहारीक भोज करय पड़ितैक। कतय सए करतै भोज?



गजना धारक भित्ता पर कबरगाह आ असमसान अगले-बगल छइ। गुलो कए असमसान दिस राखल गेल। ढिमकी सब सए अलग समतल जमीन पर। अरथी जहिना राखल गेल कि धरती डोलय लागलै।

—'अरे बाप! भूमकम होइ छइ हौ!' —परमेसर बाजल। जे ठाढ़ रहय, से गिरय लागल त बैठ गेल। धरती पर हाथ राखि देलक। गजनाक पानि मे हिलकोर उठलै। टोल पर हल्ला होइ छइ। सबहक मन मे डर पैसि गेलै। नइ जानि की हेतइ। धरती गों-गों करइ छइ। सब कए अपने प्राणक डर रहइ। एक मिनट के बाद धरती थिर भेलै त गाम परक चिंता भेलै। पता नै धीया-पूता केहन छै? घर छै कि खसलै? परमेसर कए मन भेलै जा कए देख आबय। लेकिन असमसान सए एना के घूरल-ए?

—'हौ भेलै। आब जल्दी-जल्दी खाधि खुनइ जाह।' परमेसर बाजल।

दू टा कोदारि रहै। दू गोटय भिड़ल। एक गोटय चचरी मे बान्हल गुलो कए खोललक।

भूकम्प फेर एलै। डरक मारे सब बैठ गेल। धरती आध मिनट थरथराइत रहलै।

टोल पर सए एक आदमी एलै। कहलकै—'टीभी मे समाचार देलकइए जे नेपाल मे बहुत लोग मरलै। बहुत मकान खसलै। अखैन और भूकंप एतै।'

सब कए अदंक समा गेलै। खाधि खुनइ वला कए परमेसर कहलकै—'हे रौ! ओतने खून जते मे ठठरी अँटि जाइ। बेसी खूनि कए की हेतै?'

खूनल भाए गेलै त सब मिलि कए गुलो कए खाधि मे उतारलक। आब ऊ कि दइतिए ता दू गोटय मोटरसाइकिल सए एलै। दुनू नेता रहइ। कन्हैया आ जगदीस। कन्हैया बाजल—'नीक भेलौ जे आगि नइ पड़ल रहौ। लहास कए निकाल। ठेला पर लादि कए असपताल लेने आ। ओइठिन पोसमारटम हेतै। भूमकम के हरजाना भेटतौ। चारि लाख। जल्दी लाए चल। कहिहइ भूमकम सए मरलै।'

सब अकबकायल ठाढ़ रहय। एहनो कतौ भेलइए। असमसान सए मुरदा घुरलइए! भारी असमंजस वला बात। गुलो त भूमकम सए मरबो ने केलइ। ऊ त आठे बजे मरलइ। आ भूमकम भेलै एगारह बजे।

ओकरा सब कए छह-पांच करैत देख जगदीस गरजल—'रे! धरम-करम के आ सत के ठीका तोंही सब लेने छिही? अइ संसार मे की नइ होइ

छइ! के कहतै जे गुलो भूमकम मे नइ मरलै? हम त कहबौ गुलो कए तूं मारलिही। हम मारलिऐ। पूरा संसारे गुलो कए मारि देलकइ। ई भूमकम संसार सए अलग छै की?'

अरजुन साहस देखेलक। परमेसर कए कहलकै—'मौसा! ठेला वला कए पैसा कतय सए देबै?'

परमेसर कोन जवाब देत। ऊ तए अपनो दवाइ उधारे लइ-ए। दुनू कए कनफुसकी करैत देख कन्हैया पुछलकै—'की बात छिऐ रे?'

परमेसर उतारा देलकै—'ठेला लए पैसा नइ छइ।'

कन्हैया एकटा पनसोहिया निकालि कए दैत कहलकै—'जल्दी लाए कए या। हम सब असपताले मे रहबौ।'

परमेसर ठेला आनय गेल। जे रहि गेल से खाधि सए गुलो कए निकाललक। कफन उतारलक। उतारल धोती-गंजी फेर गुलो कए पिनहेलक। देह मे लगलहा माटि झाड़लक। छोटुआ आ बिजला कए पहरा पर बैठा देलक। आ असपताल चलि गेल।

ओतय हल्ला रहइ जे सिपौल जिला मे भूमकम सए तीन गोटय मरलै। ओइ तीन मे एकटा गुलो रहय।

कन्हैया आ जगदीस जल्दिए सब चीज करबा देलकै। लहास कए फेर सए असमसान आनइ मे साँझ पड़ि गेलइ। कठिहारी सब भूख सए लहालोट भाए गेल रहय। चटकी सए गुलोक धोती-गंजी उतारलक। कफन ओढ़ा कए खाधि मे देलक। छोटुआ मुँह मे ऊक देलकै। दुनू कोदरवाह माटि सए गुलो कए तोपि देलक।

कुइछ खरहू आ जनीजाति तमाशा देखैत रहइ। ऊ सब मुसलमान रहय। एकटा मुसलमानी दोसर सए कहलक—'ई सब हिन्नू हइ कि मुसलमान? आगो दइ हइ आ दफनो करइ हइ!'

दोसर बाजल—'या अल्लाह! तू देखलहु ना। एक बार गाड़ के ले गेलइ। फेनू गाड़लकै हइ। कहाँ दुन पैसा भेटिहइ। हिन्नुओ के कोनो धरम हइ! मरल इनसान का ऐसा बेइज्जती! अल्लाह हो अल्लाह!'

तेसर मुसलमानी बाजल—'धरम ले के की होतइ? पैसा होइ हइ त बालो-बच्चा गुजर करिहइ।'

अरजुन आ छोटुआ कोनो कल पर नहा कए घर आयल। छोटुआ भूखे



लटुआ गेल रहय। माय कए कहलक—'हे गे, खाय लए दे।'

'देखहक! करइ छै केना। हे रौ, तू करता छिही। तोरा तए अरबा-अरबाइन खाय पड़तौ। कने थम्ह ने।' —बेला वाली बाजल।

'हम से सब कुच्छो ने बुझइ छिऐ। हमरा खाइ लए दे।'—छोटुआ माय के कनहा झमारि देलक।

'देखहक तए। अरे रुक ने। कोय ने खेलकइ-ए। सब भुखले छै। चूड़ा-चीनी मंगा दइ छियौ। और सब लए लिट्टी मंगबै छिऐ।'

'हम चूड़ा नै खेबौ। हमहूँ लिट्टिए खेबौ।'

बेलावाली छोटुआ सए बहस नै केलक। वाड कमिसनर पनरह सौ टाका दाए गेल रहइ। ओइ मे सए जुगता कए एगो नमरी निकाललक। उमेशबा कए लिट्टी दइ लए कहलकै। डोमा दोकान मे चूड़ा-चीनी बेसाहलक।

रुनियां परसि कए छोटुआ कए देलकै। छोटुआ मुँह बिधुअयने बैठल रहल। नै खेलक। जहिना लिट्टी एलै कि एकटा लपकि लेलक। सब हाँ-हाँ करिते रहि गेलै। छोटुआ लिट्टी खा गेल।

'ई छौड़ा ढहलेल छै। देवो-पितर कए कुइछ नइ बुझै छै।' —रिनियां बाजल।

'हे गै छौड़ी! चुप रहलिही?'—छोटुआ गुम्हरल।

'हौ दैव! माफ करिहक। नइ बुझै छइ। नाबोध छै।'—बेलावाली गोहारि केलक।

'हँ, बड़ नाबोध छौ!'—रिनियां व्यंग्य केलकै।

छोटुआ कनेकाल ठकुआयल रहल। फेर दोसर लिट्टी उठा कए खाय लागल।

कोय कुइछ नइ बाजल। जेहने एगो खेने, तेहने दू गो।

तेसर दिन एमपी एलै। बेलावालीक हाथ मे पाँच हजार टाका देलकै। जमीन आ घर के आश्वासन देलकै।

चारिम दिन एगो मंत्री दस हजार दाए गेलै। ओकरा एगो छोटकी झोड़ा मे बान्हि कए बेलावाली अपन अंचरा मे खोंसि लेलक। ई टाका ओकरा भारी चिंता मे धाए देलकै। झोड़ा कतौ खसि ने पड़ै; कोय लाए ने लै—यैह बात हद्दो घड़ी ओकर माथा मे घुरिया लागलइ।

'ला ने। राखि दइ छियौ।' —अरजुन कहलकइ।

बेलावाली कए एक मन भेलै जे दाए दइ। फेर भेलै न्न:। अइ छौड़ा के कोनो ठेकान नै छै। पी कए उड़ा देतै। अखैन धरि दू-तीन सौ टानि कए पी गेलै।

साँझ मे महिनदर एलै। कहलकइ—'ई टाका भोज लए राखि दही। अइठिन रखनाइ ठीक नै छौ। ने केबाड़ छौ, ने फट्टक छौ। राति-विराति कोय छीनिछोरि लेतौ। ला, नेने जाइ छियौ। राखल रहतौ। जहिया, जतेक के खाँग हेतौ, लाए आनिहें।'

टाका महिनदर लाए गेल। बेलावालीक जान हल्लुक भेलै। लेकिन घड़ीघंटा बीतैत ने बीतैत ओकरा संखा डोबय लागलै। नइ जानि महिनदर की करतै? टाका घुरेतै कि नै घुरेतै? खरचा काए लेतै कि पचा जेतै? महिनदर के कोन बिसबास? ऊ तए ठक छै। ठकि कए जमीन लिखाय लेलकै। ओकरा कोन झोंक उठलै जे टाका दाए देलकइ। बेलावाली पछताय लागल। ओकरा होइत रहलै जेना कोय कुछो छीन लेने हो।

रिनियां कए पता चललै त बाजल—'देलही किए? तू तए अपने बुड़बक छिही। रातिए खरचा नइ ने काए लेतै? हम भोरे आनि देबौ। चिंता नै कर।'

बेलावाली कए अनवर कहलकै—'टका-पैसा जे भेटइ छह से बरजेश लग जमा केने जाह। ऊ इमनदार छै। बइमानी नइ करतह। लगो मे छह। जखैन जे बेगरता हेतह से लाए लिहह। अइठिन इस टा समाजो तए छै। सबहक देखल रहतै। नै बुड़तह।'

रिनियां भोरे महिनदर लग पहुँचल। कहलकै—'भैया, टका दहक।'

'की भेलौ? बिसबास नै रहलौ? हम अपन नै रहियौ? बिरान रहियौ? ठीक छै। लाए जो। अखैन तुरंत लाए जो।' —महिनदर उठल आ झोड़ा लाबि रिनियां कए पकड़ा देलकै—'गनि ले।'

महिनदर तमसायल रहय। रिनियां कए फुराइत नै रहै जे की कहौ। फेर बाजल—'माय कहलकै लाए आन। खरचा तए होइते रहइ छै।'

महिनदर कुइछ नै बाजल। ओकर मन खट्टा भाए गेल रहइ।

बरजेश टाका राखइ लए तैयार नै रहै। लोग सब जोर देलकै त राखि लेलक।

बेरू पहर कन्हैया संगे सरकारी आदमी एलै। बेलावाली कए चारि लाख के चेक देलकै।



कन्हैया बाजल—'अखैन धरि ककरो नै भेटलइए। सब सए पहिने तोरे भेटलह-ए। सेहो हमहीं दौड़-बरहा केलिऐ, लागल रहलिए तैं भेटलह। एकरा बढ़िया सए राखने रहह। काल्हि बेंक मे जमा करा देबह। रुपैया दू-तीन दिन मे खाता मे आबि जेतह।'

बेलावाली बड़ी काल धरि चेक कए उनटा-पुनटा कए देखइ-ए। रिनियां सए पुछइ-ए—'हे गै, की लिखल छै?'

'अंग्रेजी मे कुछो लिखल छै। राखि ने दही। हराय-ढ़राय जेतौ। ने त ला, बरजेश कए दाए आबै छियौ।' —रिनियां चेक बरजेश कए दाए आयल।

'बुढ़बा कुछो जानैत रहइ। तैं ने ओतेक जाड़ मे दोड़ैत रहलै। हमरो दौड़ैलक। तब जाए कए खाता खुललै। जनधन बेंके छिऐ ने गे?' —बेलावाली जेठकी बेटी रूनियां सए पुछइए।

'की जाने गेलिऐ। बेंके हेतै की।' —ठीक सए रूनियों कए नै बूझल छै।

'हे गे, बरजेश पासबुक मांगलकौ—ए।' रिनियां माय कए कहइए।

'ताकि कए दाए आबही ने।' —माय कहै छै।

रिनियां पासबुक ताकलक। बरजेश कए दाए आयल। माय कए कहलक—'कहलकौ-ए काल्हि जमा काए देतौ।'

आइ अरजुन रंग मे अय। आब ओकरा ककरो डर नै छै। माय सए एगो नमरी झिटलक। दारू पीलक आ चौक पर हैटफैट काए रहल-ए—'हमर बाप जकाँ केकर बाप है। बड़का-बड़का एमपी मिनिसटर के लाइन लगा दिया। कतेको आदमी के बाप मरा। एतेक गाड़ी-घोड़ा ककरो दुआर पर लगा?'

नै रहल गेलै त एक गोटय बाजल—'हे रौ, समाज नै रहितियौ त सब टिरबी घुसड़ि जइतउ।'

'के बोला रे? कोन समाज हमरा लए की करता है रे? साला! हम अपना बाप का खाता है। अपना बाप का पीता है। दोसर के किए फाटता है!' —अरजुन बीच रोड पर खसि पड़ल। दू गोटय उठा कए घर दाए एलै।

कन्हैया भोरे बेलावाली लग पहुँचल—'लाबह। चेक दएह। जमा करबै।'

'चेक तए बरजेश कए दाए एलइ!' —बेलावाली कए डर भेलै।

'दिएलियह हम आ दाए देलहक ओकरा।' —कन्हैया तमसाइत बाजल आ चोट्टे बरजेश लग गेल।

'बरजेश! ई बात सब जानै छै जे हमरे चलते गुलबा के पलिवार कए चारि लाख के चेक भेटलइ-ए। हम नै रहितिऐ तए गुलबा त भूमकम सए पहिनइ माटि तर मे चलि गेल रहितइ। हमहीं ओकरा ठेला पर लदबेलिऐ। ठेला खातिर पान सौ टाका देलिऐ। असमसान सए असपताल लाए गेलिऐ। पोसमास्टम करबेलिऐ। औपिस मे दौड़-बरहा केलिऐ। किरानी आ हाकिम कए घूस देलिऐ। तब जाए कए भेटलइ। ओहिना नइ भेटलइए। तैं ओइ मे हमरो हिस्सा चाही। हमरो एक लाख चाही।'

'ठीक छै। तोंही दिएलहक। त ई बात ओकर पलिवार कए कहबहक ने! हमर नै ने छिऐ जे हम दाए देबह? ऊ सब कहि देतह तए एक की, तूँ चाइरो लाख लाए लिहह।' —बरजेश तर्क देलकै।

'सएह। कहि देलियौ। हमर माँगब गैर मोनासिब नै छै। एतेक खटलिऐ। एतेक खरचा केलिऐ। एक लाख त हमर वाजिब हक छै।' —ई कहैत कन्हैया उठि गेल।

अनवर सुनैत रहय। आबि कए बेलावाली कए कहलकै—'बहुत गीध सब मड़राइत छह! बचि कए रहिहह।'

अनवर की कहै छै, बेलावाली कुइछ ने बुझलक। बकर-बकर ओकर मुँह देखैत रहल।

अरजुन जे राति पी कए सुतलै से आइ दुपहर मे उठलै। नेहेलक। खेलक। माय लग आयल। कहलकै—'हे गे, टका दे। रिक्शा किनबै।'

'कोन टका देबौ? राखइ लए देलही रहय?' —बेलावाली कए तामस उठलै।

'दस हजार जे भेटलौ से निकाल।'

'ऊ तोरे दाए दियौ? आ भोजभात नइ करिअइ?'

'चारि लाख भेटतौ ने? तइ मे सए करिहें।'

'आ बहीन के बियाह नै करबिही? घर नै बनेबही?'

'बियाह मे ओतेक लागतौ?'

'बचि जेतौ तए लाए लिहें।'

'हम से सब नै बुझइ छिअइ। तूं उड़ा-पुड़ा देबही। हमरा अखैन दे। नइ तए कदम के गाछ बेच लेबौ।'

'कतेक बेर बिपत्ति एलै। अइ दुनू गाछ के बुढ़बा नै बेचलकै। रिनियांक बियाह लए राखने रहइ। आ तूं कहइ छिही बेच लेबै?'

'सब चीज तूं रिनियें लए राखबिही? रिनियें टा बाप के बेटी छिऐ? हम बाप के बेटा नै छिऐ? बड़का गाछ हमरा हिस्सा मे छौ। ओकरा हम बेच लेबौ।'

'कोनो गत्तर मे लाज-शरम छौ कि नइ? बापक किरियो-करम नइ भेलौ-ए आ तूं बांट-बखरा करय लागलिही।'

सुजीत ठाढ़ भेल दुनू माय-पूत के बकझक सुनैत रहय। हठात बाजल—'एगो गाछ हमहूँ लेबै।'

रिनियां बहुत उदास अय। बबा मन पड़ै छै। कतय चलि गेलै बबा? आब नै भेटतै? बबा कए देखै लए जी औनाइ छै। मचान लग जाइ-ए। सुन्न अखरा मचान। बबा नै छै। बबाक कोनो चीज नै छै। ने टाट मे टांगल अंगा। ने मचान सए टेकल लाठी। ने नीचां मे राखल लोटा। कतौ कुइछ नै छै। घर भखोभंख लागै छै। एकाएक रिनियां कए भेलै जेना बबा हाक देने होइ—दाइ गे!

कहाँ छै बबा? एतय तए कोय नै छै! तब के हाक देलकै? आवाज तए बबे के रहइ। रिनियां कए मन भेलै जवाब दइ—'की कहइ छहक बबा?'

ओकर दिमाग मे बबाक हाक चकभाउर दाए रहल छै। दाइ गे! कतेक साफ आवाज रहै। लागै छै जेना बबा ठीके मचान पर पड़ल हाक देने होइ—दाइ गे! केहन नचार, बेबस, आर्त्त पुकार! ओइ पुकार मे कतेक दर्द, कतेक सिनेह आ कतेक करुणा रहइ! आब ओना के सोर पाड़तै?

ओकरा भेलै जे हाक दइ—बबा! हौ बबा!

ठेंगहुन पर मूड़ी गोंतने रिनियां मचान पर बैठल-ए। होइ छइ जेना बबा फेर हाक देतै। अकानैत रहइ-ए। मगर बोली के देतइ? बबा तए चलि गेलइ।

रिनियां कानइ-ए।

• • •



सुभाष चंद्र यादव, कथाकार, समीक्षक एवं अनुवादक। जन्म : 05 मार्च, 1948, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान : बलवा-मेनाही, सुपौल। आरंभिक शिक्षा दीवानगंज एवं सुपौलमे। पटना कॉलेज, पटना सँ बी.ए.। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लीसँ हिंदी मे एम.ए. तथा पी-एच.डी.। 1982 सँ अध्यापन। सेवानिवृत्त प्रोफेसर। मैथिली, हिंदी, बंगला, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, स्पेनिश एवं फ्रेंच भाषाक ज्ञान।

प्रकाशन : घरदेखिया (मैथिली कथा संग्रह) मैथिली अकादमी, पटना, 1983
हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद) साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1988
बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1999
बिहाड़ि आउ (बंगलासँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, 1995
भारत विभाजन और हिंदी उपन्यास (हिंदी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 2001
राजकमल चौधरी का सफर (हिंदी जीवनी), सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
बनैत बिगड़ैत (मैथिली कथा संग्रह), श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2009
मैथिली मे करीब अस्सी टा कथा, पैंतीस टा समीक्षा, किछु यात्रा संस्मरणक अतिरिक्त हिंदी, बंगला तथा अंग्रेजीमे अनेक अनुवाद प्रकाशित।
प्रबोध साहित्य सम्मान 2012सँ समादृत

भूतपूर्व सदस्य : साहित्य अकादमी परामर्श मंडल, मैथिली अकादमी कार्य समिति, बिहार सरकारक सांस्कृतिक नीति निर्धारण समिति एवं जीआईए., भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

संपर्क : 16/49, प्रोफेसर्स कॉलोनी, सहरसा-852201
वार्ड नं. 16, सुपौल-852131, बिहार

मोबाइल : 09006740092

ई-मेल : *chandra.yadav.subhash@gmail.com*

प्रकाशक
किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल-852131




₹100